राष्ट्र को समर्पित

KNOWLEDGE IS POWER

Ratnank

रत्नांक

महाविद्यालय पत्रिका, तृतीय अंक : मार्च 2019

श्री रतनलाल कंवरलाल पाटनी गर्ल्स कॉलेज, किशनगढ़

संरक्षक
CA सुभाष अग्रवाल

परामर्श
डॉ. वन्दना भटनागर
डॉ. शैलेन्द्र पाटनी

सम्पादक
डॉ. हुकम सिंह चम्पावत

टंकण
नेहा शर्मा

विज्ञापन
अमित दाधीच
राजेश जैन

पता :-
श्री रतनलाल कंवरलाल पाटनी गर्ल्स कॉलेज,
अजमेर रोड़, किशनगढ़,
अजमेर (राजस्थान) 305801
दूरभाष : 01463-307000
ई-मेल : info@rkgirlscollege.edu.in

विषय	पृष्ठ
रत्नांक	2
अध्यक्ष संदेश	3
सचिव संदेश	4
प्राचार्य संदेश	5
सम्पादकीय	6
आंगन की सुरभि	7
घोड़े वाली लड़की	8
राष्ट्रीय युद्ध स्मारक एक अविस्मरणीय स्मृति	9
फ्लोराइड का दंश झेलता मानव स्वास्थ्य	10-11
3 इडियट्स, म्युचुएल फण्ड में एस.आई.पी.	
निवेश एक बेहतर भविष्य	12
गुरू की महिला, माँ, साथ	13
वर्तमान भारतीय राजनीति में धारा-370	
एक दृष्टिगत विचार	14
नीरव, अनुच्छेद-35A विशिष्ट	
जानकारी सहित	15
पुलवामा की धरती	16
अध्यापक शिक्षा में नवाचारिक प्रवृत्तियाँ	17
शिक्षा मनोविज्ञानः एक परिदृश्य	18
याद, प्रदूषण परिप्रेक्ष्य में गंगा नदी	19
हिन्दुस्तान, नारी सशक्तिकरण	20
छात्रों तथा शिक्षकों द्वारा लेखनी	21-35
अंग्रेजी लेखन	36-37

एक शिक्षा स्वप्न

विशाल हृदयी, सक्षमता की प्रतिमूर्ति पूज्य 'बाबासा' का शिक्षा से जुड़ा एक ऐसा स्वप्न जिसे वे अन्तर्मन से छूकर कहते थे कि इस शहर के आस–पास की निवासित समस्त बालिकाओं में शिक्षा की अलख जगाने हेतु एक ऐसा महिला शैक्षणिक केन्द्र हो जिसमें वे अपने भविष्य को निखारकर आत्मनिर्भर बन सके। वे महान व्यक्तित्त्व जिन्होंने अपने दीर्घ एवं गहन अनुभव से यह महसूस किया कि यदि घर की एक कन्या पढ़ेगी तो अनेक पीढ़ीयाँ शिक्षित होंगी तथा वे कहीं दबेगी नहीं, हारेगी नहीं स्वयं को सफल, सक्षम बनाये हुए एक नव समाज की स्थापना करेंगी।

उनके इसी दिव्य स्वप्न को साकार करने का पवित्र कर्त्तव्य उनके परिजनों ने पूर्ण करते हुए किशनगढ़ क्षेत्र को अत्याधुनिक शिक्षा से जुड़ा एक ऐसा शिक्षण संस्थान समर्पित किया जिसे देखते ही लगता है मानो सरस्वती वाणी को ऊर्जस्वित करता ऐसा अद्‌भुत, अनुपम, अद्वितीय शैक्षिक संस्थान पहले नहीं देखा ! इन पावन व उच्च विचारों के धनी 'बाबासा' एवं उनके परिवारजनों की शोभा जितने भी शब्दों में की जाए वहाँ शब्दों की अल्पता प्रतीत होने लगती है।

पूज्य 'बाबासा' को कोटि–कोटि नमन !

''रत्नांक''

''रत्नांक'' शब्द दो शब्दों यथा 'रत्न + अंक' शब्द से मिलकर बना है, जिसमें 'रत्न' से आशय धरती से प्राप्त बहुमूल्य खनिज पदार्थों से माना जाता है, जिसका सामान्य अर्थ प्रसिद्ध चमकीले खनिज पदार्थ हीरे, मणि, नगीना या जवाहारात से लिया जाता है। इसका विशिष्ट व महत्वपूर्ण अर्थ 'सर्वश्रेष्ठ' है।

इसमें दूसरा शब्द अंक है जिसका अर्थ संख्या, गोद, चिन्ह् व भाग्य माना जाता है। अत: 'रत्नांक' शब्द से आशय 'रतन के लिए अंक' या 'रतन की गोद में' से लिया जा सकता है। यहाँ 'रत्नांक' शब्द इसलिए महत्त्वपूर्ण है क्योंकि हमारा पूरा समूह परम आदणीय श्री रतनलाल जी एवं उनके आत्मज कंवरलाल जी से ही पल्लवित है। ''रत्नांक'' शब्द में दो वर्णों यथा 'र' व 'क' की अपनी एक विशिष्ट महता प्रतिपादित है इस शब्द में अग्र वर्ण 'र' पूजनीय श्री रतनलाल जी का स्मरण कराता है तथा शब्द का अन्तिम व पश्च वर्ण 'क' परम आदरणीय श्री कंवरलाल जी को पुष्ट करता है साथ ही ये वर्ण हमारे महाविद्यालय के नाम को भी चरितार्थ करते हुए प्रतीत होते हैं।

इस शब्द के सामासिक स्वरूप से अर्थ को समझा जाये तो प्रथम अर्थ रतन के लिए अंक एवं द्वितीय अर्थ रतन के अंक में अर्थात् रतन की गोद में से माना जा सकता है। जिसका अर्थ परम पूज्य बाबासाहेब श्री रतनलाल जी को समर्पित प्रकाशित पत्र से है तथा दूसरा अर्थ पूजनीय बाबासाहेब की गोद में पल्लवित व पुष्पित समूह के सम्बन्ध में माना जा सकता है। महाविद्यालयी पत्रिका के सम्बन्ध में हमारा यह प्रयास है कि तृतीय अंक के रूप में प्रकाशित यह महाविद्यालयी पत्रिका ज्ञान की आभा को प्रकाशित करते हुए परमपूज्य बाबासाहेब एवं परम आदरणीय श्री कंवरलाल जी को समर्पित है। अत: इस पत्रिका का नाम 'रत्नांक' रखना हमारे महाविद्यालय ही नहीं अपितु सम्पूर्ण आर. के. समूह के लिए गौरव की बात है।

संदेश

'मानवता' केवल शब्द मात्र ही नहीं है। यह एक ऐसा मर्मस्पर्शी शब्द है जिसमें सकल जीव जाति को एकसूत्र में बांधने की शक्ति है। मनुष्य जीवन की पहचान इसी शब्द से सार्थक है कि वह मानवता के कितने करीब है। यदि हम जीवन में एक बार इस शब्द के मर्म को समझ लें तो शायद ही कभी हमें युद्ध जैसी विभीषिकाएं देखने को मिले, परन्तु वर्तमान समय में मनुष्य स्वयं को आगे रख सबको पीछे रखने की अनियति होड़ में अनवरत लगा हुआ है जो 'मानवता' शब्द पर कठोर प्रश्नवाचक चिन्ह् है। इसी मानवता शब्द पर प्रश्न उठाता राष्ट्र पर हुआ पुलवामा हमला है जिसे देखकर मानवता मानों शून्य में विलीन हो गई हो। मानवता से जुड़े ऐसे विषयों पर हमें गंभीरता से विचार करना चाहिए।

सनातन धर्म से ही इस शब्द की महता प्रत्येक ऋषि–मुनियों ने प्रतिपादित करते हुए एक सभ्य समाज की संकल्पना की है। मुझे विश्वास है राष्ट्र को समर्पित 'रत्नांक' पत्रिका का यह अंक अवश्य ही पाठकों को लाभान्वित करते हुए राष्ट्र के प्रति प्रेरणा का संचार करेगी। शिक्षा जगत में शब्द प्रेरणाप्रदायिनी 'रत्नांक' के इस नव अंक की मैं सम्पूर्ण सम्पादक मण्डल को अनंत असीम बधाई एवं शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

इन्हीं मंगलकामनाओं सहित।

अशोक पाटनी
अध्यक्ष

संदेश

'राष्ट्र' का निर्माण मानव सभ्यता में संचरित शिक्षा, ज्ञान, विज्ञान व संस्कृति के अमूल्य परिप्रेक्ष्य से परिणत है। इसके प्रति समर्पण का भाव कोरी परिकल्पना नहीं होती है वह तो मन से प्रतिफलित एक ऐसी उत्कट मनोभावना होती है जो मन व बुद्धि के सामंजस्य स्वरूप से जन्म लेती है। ऐसा गूढ़ व रहस्यात्मक विचार केवल गहन अनुभव से ही प्राप्त हो सकता है। इसका श्रेष्ठ उदाहरण हमारे देश की सेना है जो रात–दिन, सर्दी–गर्मी, वर्षा, तूफान से दो हाथ करते हुए राष्ट्र की अक्षुण्णता को बनाये रखते हुए सीमा पर अडिग है। इस पथ पर जुटे भारत के हर नागरिक को मैं सलाम करते हुए गौरवान्वित हूँ।

मेरा विचार ही मेरा विश्वास है कि हमारे महाविद्यालय की प्रत्येक बेटी अपने राष्ट्र के प्रति एक विकसित सोच को कायम रखते हुए राष्ट्र के नवोत्थान में अपना योगदान सिद्ध करेगी। 'रत्नांक' का यह अंक कुछ ऐसे ही विचारों का गुलदस्ता है जिसकी हर कली राष्ट्र को समर्पित है। 'रत्नांक' के इस अंक की पूर्णता में प्रयासरत सम्पूर्ण सम्पादक मण्डल को इसकी हार्दिक बधाई व शुभकामनाएँ देता हूँ।

सी.ए. सुभाष अग्रवाल

सचिव

संदेश

'राष्ट्र' के विकास में शिक्षा व समाज का अहम योगदान होता है। शिक्षा जब समृद्धि की ओर अपने कदम बढ़ाती है तो वह एक सुंदर व सभ्य समाज की कल्पना संजोती है। एक श्रेष्ठ समाज का नवांकुर प्रस्फुटन तभी संभव है जब समाज का हर युवा शैक्षिक प्रेरणा लेकर आगे बढ़े। हमारा यही प्रयास है कि हमारे यहाँ शिक्षा ग्रहण कर हर बेटी शिक्षा के उच्च मुकाम हासिल कर अपने सपनों को साकार करती हुई राष्ट्र के नवनिर्माण में अपनी भूमिका अदा करे। आज निरंतर चार वर्षों से प्रगतिशील बालिका शिक्षा से जुड़ा हमारा महाविद्यालय बेटियों को उन्नति की उड़ान देने हेतु प्रयत्नशील है।

शिक्षा के इन्हीं आयामों को मूर्त्तरुप देने का कार्य शब्द स्वरुप की साक्षी बनती हमारी महाविद्यालयी पत्रिका 'रत्नांक' है। इस पत्रिका के माध्यम से विद्यार्थी व संकाय सदस्य वैचारिक नवसृजना की ओर गतिशील है जो प्रसन्नता का विषय है। राष्ट्र के गौरव को गरिमा प्रदान करती 'रत्नांक' पत्रिका के सम्पूर्ण सम्पादक मण्डल को इस नव अंक की बहुत–बहुत बधाई व शुभकामनाएँ देती हूँ।

डॉ. वन्दना भटनागर
प्राचार्य

सम्पादकीय

'अनुशासन' स्वात्मा का एक ऐसा रूप है जिससे मनुष्य एक सही धारा में अपने कदम बढ़ाता है। इसी अनुशासन का पर्याय हमारे देश की सेना है। आज की हर विपरीत परिस्थितियों में देश की रक्षार्थ सेना जो अवदान प्रस्तुत करती है वह वाकई सलाम ए काबिल है। हमें यह महसूस होना चाहिए कि हमारी सेना जो अनुशासनात्मक अनुकरणीय कार्य करती है अगर लेशमात्र भी अनुशासन हम स्वयं में स्थापित कर दें तो हमें कभी भी सीमाओं पर नज़रें गढ़ाऐं नहीं रहना पड़ेगा। इनकी सेवा के इसी जज़्बे को सलाम करते हुए गर्वानुभूति है।

सेना का एक जवान जब अपने घर से प्रहरी, रक्षक के रुप में निकलता है तब उसे यह विश्वास नहीं रहता कि वह वापस अपनी दहलीज पर पहुँचेगा या नहीं? इसी सोच के साथ कि जब लौटेगा तो वह मन बल से जीता हुआ एक सच्चा राष्ट्र व परिवार का गौरव होगा। परन्तु कुछ कुत्सित सोच का दायरा लिए घातक रसायनों के एक धमाके से उनके मनोबल ही नहीं सम्पूर्ण शारीरिक तत्त्वों को छिन्न–भिन्न कर देता है। यह कौनसी नियति है कि एक ही धरती का पुत्र दूसरी धरती पर अपना तुच्छपन इस कदर दिखाता है कि स्वयं ही नहीं सामने वाले के बच्चों को भी अनाथ कर देता है। यह सोचकर मन बहुत खिन्न हो उठता है। आज हमें ऐसे विषयों पर गंभीरता से चिंतन करने की आवश्यकता है।

हमारा भारत आजादी पूर्व से लगातार अब तक अनेक ऐसे घाव झेल चुका है जिसके नासूर अब तक भरे नहीं हैं। आतंकवाद, नक्सलवाद, सीमाई घुसपैठ इसके ज्वलंत उदाहरण है। इतना ही कहाँ अब तो जातिवाद व सम्प्रदायवाद का ज़हर ऐसा फैल रहा मानों राष्ट्र की जड़ों में किसी ने एसिड ही डाल दिया हो जो एक दिन न चाहते हुए भी हमारे हरे भरे वटवृक्षीय राष्ट्र को लील ही जायेगा। क्या हमें इस तरह पीछे जाते राष्ट्र के प्रति नहीं सोचना चाहिए? आज हमें आवश्यकता है, आतंकवाद को नेस्तनाबूद कर नक्सलवाद को जड़ से मिटाने की। हमें आवश्यकता है साम्प्रदायिक सौहार्द्र बनाकर जातिवाद के पनपते अंकुरण को कुचलकर समाप्त करने की। हमें आवश्यकता है हमारे युवाओं को अत्याधुनिक शिक्षा प्रदान कर उनके भविष्य को बनाने की। यदि हम इस प्रकार के सकारात्मक विचारों की उत्पत्ति करेंगे तो निश्चय ही वह दिन दूर नहीं जब हम अपनी आने वाली नवपीढ़ी को पुनः सोने की चिड़िया वाले भारत के दर्शन कराने में सफलता अर्जित कर सकेंगे। मुझे विश्वास है यदि हम ऐसे विचारों का अंकुरण करेंगे तो हमारे ज़ेहन में निश्चित ही हमारे राष्ट्र के प्रति उन्नतिशील विचारों को परिपुष्टित करेंगे। उस दिन विश्व स्तरीय धरोहरों का देश केवल हमारा व हमारा ही होगा।

डॉ. हुकम सिंह चम्पावत
सहायक आचार्य, हिन्दी विभाग

आंगन की सुरभि

चुलबुली सुरभि की बातें भी बड़ी ही चुलबुली होती थी। वह हमेशा अपने पापाजी से कुछ ऐसे ही नटखट अंदाज में दिल को अंदर तक झकझोर देने वाले प्रश्न पूछ लिया करती थी, जिसका ज़वाब पापाजी बड़ी सहजता से देने की कोशिश करते थे। एक दिन घर के आंगन में खेलती सुरभि ने आंगन में वर्षों से फले फूले गहरी छायाँ देने वाले वृक्ष को देखकर एक प्यारा सा प्रश्न पूछा कि पापाजी ये आंगन में जो पेड़ है उसे पीछे वाले बगीचे में लगा दें तो ?

पापाजी असमंजस में पड़कर बोले बेटी ये लगभग पन्द्रह वर्ष पुराना पेड़ है, नई जगह, नई मिट्टी में ढल पाना या पुनः लगना इसके लिए बहुत मुश्किल होगा तभी सुरभि ने अपनी जलभरी नम आंखों से पुनः सवाल करते हुए कहा कि एक ऐसा पौधा या पेड़ और भी तो है जो आपके आंगन में पिछले अठारह वर्षों से अधिक पुराना है ! क्या वह नई जगह में ढल पायेगा ? और मोती सी दो बूँदें उसकी पलकों से गिर ही गई। पापाजी को यह बात समझने में देरी नहीं लगी और कण्ठभरे गले से ज़वाब देते हुए कहा कि यह शक्ति पूरी कायनात में सिर्फ नारी के पास ही है जो किसी कल्पवृक्ष से कम नहीं है। खुद को चाहे कोई भी स्थिति–परिस्थिति मिले उसमें ढलकर औरों की सेवा करना ही अपना धर्म मान लेती है, ताउम्र उनके लिए जीती है मानों सदियों पुराना उनसे कोई अटूट रिश्ता हो। मेरी प्यारी सुरभि एक बेटी से ही बहिन, पत्नी व माँ की छवि प्रतिफलित होती है। अब सुरभि की नम आँखें कर्त्तव्य पथ की ओर निहार रही थी।

सी.ए. सुभाष अग्रवाल

घोड़े वाली लड़की

ज़िन्दगी बिंदास होनी चाहिए, हम जैसे हैं, सर्वश्रेष्ठ हैं। कई बार हमने देखा है कि कुछ लड़कियाँ यह कहती है कि काश मैं लड़का होती ! परन्तु वह नहीं जानती कि लड़की होना तो अपने आप में कुदरत का एक खूबसुरत तोहफा है। आज हर लड़की अपनी सफलता की ओर अपने कदम बढ़ाती हुई परिवार को गौरव की अनुभूति करवाती है।

केरल राज्य के त्रिशूर की रहने वाली कृष्णा एक आम लड़की है, जिसे एक घोड़े ने खास बना दिया। उसके पिता ने उसे 12वें जन्मदिन पर एक घोड़ा भेंट किया। एक दिन दसवीं बोर्ड के पेपर में उसे देर हो गई, तो वह घोड़े पर सवार होकर उसे दौड़ाते हुए परीक्षा कक्ष में समय पर पहुँच गई। उसका इस तरह घोड़े से परीक्षा हॉल में जाने का विडियो उसके कोच ने बना लिया और सोशल मीडिया पर अपलोड कर दिया। बस फिर क्या था, विडियो वायरल हो गया और देखते ही देखते छोटी सी कृष्णा सुपर गर्ल बन गई। लेकिन जब उससे पूछा गया कि तुम परीक्षा देने घोड़े पर क्यूँ गई? तो उसने बड़े ही भोलेपन और सरलता से ज़वाब दिया कि मेरे लिए यह सामान्य सवारी थी, जिनके पास कार होती है वे कार से जाते हैं, जिनके पास साईकिल होती है वे साईकिल से स्कूल जाते हैं, मेरे पास घोड़ा है तो मैं उससे ही चली गई, बस इतनी सी बात है।

कृष्णा के पास दो घोड़े हैं राणा और जैनवी। ये दोनों ही उसके पिता ने उसे उपहार स्वरुप दिए हैं। एक 12वें जन्मदिन पर और दूसरा दसवीं में आने पर मिला। कृष्णा कहती है– ''घुड़सवारी बहुत अच्छा खेल है। यह आपमें निर्णय लेने की क्षमता बढ़ाता है। इसे सीखने के साथ–साथ कई समस्याएं भी शुरु होगी लेकिन बीच में सीखना न छोड़ें। कभी आप गिरेंगे भी, घोड़ा किक भी मारेगा, लेकिन उन पर ध्यान न देकर सीखना निरंतर जारी रखें। जब मैं सीखती थी तो गिरती भी थी 3–4 दिन स्कूल भी नहीं जा पाती थी, मेरी टीचर भी डाँटती थी पर अब मुझे वह अपनी बेटी कहती हैं, जो मेरे लिए सबसे अधिक स्वर्णिम पल होते हैं।''

मैं तुम सभी वंडर गर्ल्स से भी यही कहना चाहती हूँ कि तुम सब अपने आप में वंडरफुल (श्रेष्ठ) हो, हमेशा अपने पर विश्वास रखो और निडर रहो। जादूगर के खेल में भी बहुत निडरता और हिम्मत चाहिए। बचपन में हमारे शहर चूरू में जादूगर सम्राट शंकर आये थे। उन्होंने अपने जादू के दौरान 3–4 बच्चियों को स्टेज पर बुलाया उनमें से एक मैं भी थी। हम सब थोड़ा घबराने के साथ डर भी रहे थे क्योंकि हमें डर था कि जादूगर अपने खेल के दौरान कभी–कभी बच्चों को बेहोश करने के साथ–साथ हवा में भी अधर लटका देता है। हमारी यही घबराहट देखकर जादूगर शंकर ने मज़ाकिया अंदाज में एक छोटी सी पंक्ति कही थी, जो सभी के लिए प्रेरणादायी है– ''लड़कियों को कभी भी डरना नहीं चाहिए, हाँ थोड़ा शर्माना जरुर चाहिए।''

!! जय हिन्द, जय भारत !!

जयश्री अग्रवाल
सदस्य, प्रबन्ध समिति

राष्ट्रीय युद्ध स्मारक एक अविस्मरणीय स्मृति

राष्ट्रीय युद्ध स्मारक एक ऐसा स्मारक है, जो कि अपने सशस्त्र बलों को सम्मानित करने के लिए नई दिल्ली के इंडिया गेट के पास के क्षेत्र में बनाया है। आप सभी यह तो जानते हैं कि हमारे देश की पहली महिला प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी जी ने अपने कार्यकाल में शहीद जवानों को श्रद्धांजलि देने के लिए इंडिया गेट के पास अमर ज्योति जलाई जो अनवरत जलायमान है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने अपने कार्यकाल में इंडिया गेट के पास ही 25942 शहीदों के सम्मान में राष्ट्रीय युद्ध स्मारक की रचना 25 फरवरी, 2019 को की। यह स्मारक 40 एकड़ क्षेत्र में कुल 176 करोड़ रूपये में तैयार किया गया। स्मारक का उद्घाटन प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने किया था।

राष्ट्रीय युद्ध स्मारक के बारे में प्रथम विचार सन् 1960 में किया गया था। जब हमारे देश के सशस्त्र बलों ने सरकार से एक युद्ध में अपने प्राणों की आहूति देने वाले सैनिकों की स्मृति के लिए स्मारक बनाने का अनुरोध किया था। इस प्रस्ताव को गंभीरता से नहीं लिया गया। वर्ष 2006 में लगातार मांग के बाद यू.पी.ए. सरकार ने सशस्त्र बलों की मांगों पर विचार करने एवं उसकी जाँच करने के लिए समिति का गठन किया, जिसके अध्यक्ष प्रणब मुखर्जी थे। सन् 2006 में रक्षा मंत्रालय ने यह निर्णय लिया था कि युद्ध स्मारक को इंडिया गेट के आसपास ही स्थापित किया जाना चाहिए। लेकिन शहरी विकास मंत्रालय ने इस क्षेत्र को विरासत का क्षेत्र बताते हुए अस्वीकार कर दिया था।

सन् 1962 में हुए युद्ध के दौरान शहीद सैनिकों के 50 साल पूरे होने पर अक्टूबर 2012 में यू.पी.ए. सरकार ने भारतीय सशस्त्र बलों द्वारा लम्बे समय से की जा रही मांग को मान लिया और राष्ट्रीय युद्ध स्मारक के निर्माण की अनुमति प्रदान की। इस निर्णय का उस दौरान काफी विरोध भी हुआ। सन् 2014 में लोकसभा चुनावों के बाद श्री नरेन्द्र मोदी जी का कार्यकाल शुरू हुआ। उन्होंने सन् 2015 में इंडिया गेट के पास स्मारक और संग्रहालय के प्रस्ताव को स्वीकृत किया और साथ ही उन्होंने कई युद्धों के दौरान शहीद हुए सैनिकों के बलिदान का सम्मान भी किया।

इस स्मारक को अखिल भारतीय युद्ध स्मारक भी कहा जाता है। यह उन सैनिकों को श्रद्धांजलि है जिन्होंने सन् 1962 के भारत चीन युद्ध, सन् 1947, 1965, 1971 के भारत पाक युद्ध और सन् 1999 का कारगिल संघर्ष एवं श्रीलंका में भारत के शांति सेवा ऑपरेशन में अपने प्राणों का बलिदान दिया था। इस स्मारक में एक स्मारक स्तंभ बनाया गया है जिसमें अनंत लौ जल रही है। यह लौ ठीक उसी तरह से जलेगी जिस तरह से सन् 1971 से इंडिया गेट के पास अमर जवान ज्योति जलाई जा रही है। यानि यह अनंत लौ 24 घंटे जलती ही रहेगी, जो सैनिकों को समर्पित है। इस स्मारक स्तम्भ की ऊँचाई 15.5 मीटर है, जो कि स्मारक के सर्किल में प्रवेश से पहले ही दूर से प्रदर्शित होता है। इस स्मारक को प्राचीन भारतीय युद्ध 'चक्रव्यू' संरचना की तरह 4 सर्किल के रुप में बनाया गया है, ये चारों चक्र सशस्त्र बल के विभिन्न मूल्यों को दर्शाते हैं। इसके पहले चक्र को अमर कहा जाता है। इसे घेरता हुआ दूसरा चक्र बनाया गया है, जिसे वीरता चक्र कहा जाता है। यह विभिन्न युद्ध क्रियाओं का चित्रण करते हुए 6 कांस्य मुरल्स चित्रों के साथ बनाया गया है। प्रत्येक मुरल का वजन 600 से 1000 किलोग्राम के बीच का है। यह भी कहा जा सकता है कि चक्र में भारत के 6 महत्त्वपूर्ण युद्ध के बारे में जानकारी दी गई है। इसके बाद तीसरा चक्र त्याग चक्र बनाया गया है जो पूरी तरह से ग्रेनाइट ईंटों की 2 मीटर लम्बी ऐसी 16 दीवारों से बना हुआ है। प्रत्येक ईंट में स्वतंत्रता के बाद से अब तक जितने भी जवान शहीद हुए हैं उनके नाम अंकित हैं। वर्तमान में इन दीवारों में 25,942 शहीदों के नाम शामिल हैं। अंतिम चक्र रक्षा चक्र बनाया गया है जो कि इन तीनों चक्रों को घेरता है। इस चक्र में 600 से अधिक पेड़ लगाये गये हैं जो एक दीवार की तरह प्रदर्शित हो रहे हैं। ये पेड़ों की दीवार देश की रक्षा करने वाले सैनिकों का प्रतिनिधित्व कर रही है।

डॉ. शैलेन्द्र पाटनी
उपप्राचार्य

फ्लोराइड का दंश झेलता

मानव स्वास्थ्य

दाँतों में फ्लोराइड का असर (दन्त फ्लोरोसिस)

फ्लोराइड रसायन प्राकृतिक रुप में जल, मिट्टी व भोज्य पदार्थों में किसी न किसी रूप में पाया जाता है। परंतु मानव जनित फ्लोराइड भी पर्यावरण में मौजूद है। बिजली उत्पादन करने वाले व पत्थर के कोयलों से संचालित थर्मल पावर प्लांट्स तथा स्टील, आयरन, एल्युमिनियम एसिड के निर्माण करने वाले उद्योग–कारखाने अपने धुएँ के साथ–साथ फ्लोराइड को भी गैस व कणों के रुप में वायुमंडल में उत्सर्जित करते हैं। इस फ्लोराइड प्रदूषण से न केवल वनस्पतियाँ दूषित होती है बल्कि सतही जल स्त्रोत, मिट्टी व फसलें भी दूषित होते हैं। फ्लोराइड जब किसी भी माध्यम से चाहे पानी व हवा से या फिर भोजन से शरीर में प्रवेश करता है तब यह स्वास्थ्य को किसी न किसी रुप में नुकसान पहुँचाता है। यद्यपि फ्लोराइड दाँतों के निर्माण में व इनकी मजबूती के लिए महत्त्वपूर्ण है।

ज्यादातर फ्लोराइड मनुष्य के शरीर में पीने के पानी से जाता है। भूमिगत जल में फ्लोराइड अमूमन पाया जाता है। परंतु इसकी अधिक मात्रा न केवल मनुष्यों के लिए बल्कि पशुओं के स्वास्थ्य के लिए भी हानिकारक होती है। विश्व स्वास्थ्य संगठन व भारतीय मानक ब्यूरो ने पीने के पानी में इसकी अधिकतम सुरक्षित मात्रा 1.0 व 1.5 पी.पी.एम. निर्धारित कर रखी है। ऐसा फ्लोराइडयुक्त पानी पाने योग्य माना है। इससे अधिक मात्रा का फ्लोराइडयुक्त पानी लम्बे समय सेवन करने से शरीर में अनेक प्रकार की विकृतियाँ धीरे–धीरे विकसित होने लगती है जिन्हें फ्लोरोसिस कहते हैं।

फ्लोराइड का स्वास्थ्य पर असर (फ्लोरोसिस): दीर्घकालीन फ्लोराइडयुक्त पानी पीने से इसका असर सबसे पहले दांतों व हड्डियों पर दिखाई देता है। इसके विषैलेपन से दाँतों पर भूरी–पीली आड़ी धारियाँ उभर आती है व कमजोर होकर ये जल्दी से टूटने–गिरने लगते हैं। दाँतों में आयी इन विकृतियों को दन्त–फ्लोरोसिस कहते हैं। फ्लोराइड के दुष्प्रभाव से मजबूत हड्डियाँ भारी, कमजोर व खोखली होकर बाँकी–टेढ़ी होने लगती है जो थोड़े से दबाव में ही अक्सर टूट जाती है। दीर्घकालीन में इससे व्यक्ति कुबड़ा, लूला–लंगड़ा या फिर अपंग व अपाहिज भी हो जाता है। इसके दीर्घकालीन दुष्प्रभाव से हड्डियों के जोड़ों में जकड़न और इससे जुड़ी मांसपेशियाँ भी सख्त होने से व्यक्ति न तो ठीक से चल पाता है और न ही उठ–बैठ पाता है। वो अपनी दैनिक क्रियाएं भी ठीक से नहीं कर पाता है। हड्डियों में आयी इन विकृतियों को अस्थिय–फ्लोरोसिस कहते है। एक बार फ्लोराइड विष के दुष्प्रभाव से दाँतों और हड्डियों में आई ये विकृतियाँ फिर कभी किसी औषधि से ठीक नहीं होती है।

फ्लोराइड का असर सिर्फ दाँतों और हड्डियों में ही नहीं बल्कि यह शरीर के लगभग सभी अंगों पर पड़ता है। जिससे अनेक प्रकार की शारीरिक समस्याएँ (दुर्बलता एवं शारीरिक कमजोरी, पेट दर्द, अपचन, दस्त, अधिक प्यास लगना, बार–बार मूत्र का आना, खून की कमी, मृत शिशु का होना, गर्भपात, बांजपन, अंधापन, प्रजनन क्षमता कम होना, बच्चों में बौद्धिक स्तर (आई.क्यू.) में कमी, थॉयराइड इत्यादि) एक के बाद एक उभर के आती है। इन विकृतियों को अकंकालीय–फ्लोरोसिस कहते हैं। जब फ्लोराइड का शरीर में प्रवेश रूक जाता है तब यह विकृतियाँ स्वत: ही ठीक हो जाती है। फ्लोरोसिस के असर से सिकल सेल एनीमिया व थैलेसीमिया के रोगियों में जान जाने का खतरा और अधिक बढ़ जाता है।

महिलाओं के पैरों में फ्लोराइड का असर अस्थिय फ्लोरोसिस (उक्त फोटो डॉ. चौबीसा जी के सौजन्य से)

गर्भवती महिलाएँ फ्लोराइड व फ्लोरोसिस की चपेट में जल्दी व सबसे पहले आती है, वहीं गर्भस्थ शिशु भी इसके कहर से बच नहीं पाते हैं। यह किसी भी उम्र में बगैर लिंग भेदभाव किये किसी को भी हो सकती है। यदि घरेलू मवेशी भी दीर्घकालीन फ्लोराइड युक्त पानी पीने लगे तो उनमें भी यह फ्लोरोसिस बीमारी विकसित हो जाती है। ऐसे मवेशी अक्सर अति दुर्बल होते हैं तथा लंगड़ा कर चलते हैं।

फ्लोराइड व फ्लोरोसिस की स्थिति: फ्लोरोसिस का प्रकोप भारत समेत लगभग 25 देशों में है। भारत में 75 मिलियन से अधिक ग्रामीण लोग इस फ्लोरोसिस से पीड़ित हैं, जिसमें 10 मिलियन से अधिक 14 वर्ष से कम आयु के लड़के–लड़कियाँ भी शामिल है। यदि देश में फ्लोरोसिस पर अभी शोध सर्वेक्षण कराया जाए तो ये आँकड़े और अधिक चौंकाने वाले हो सकते हैं। भारत में फ्लोरोसिस सिर्फ ग्रामीण इलाकों तक ही सीमित है। क्योंकि लोग यहाँ के गहरे कुओं, बावड़ियों, हेंड–पम्पों व बोर–वेल का फ्लोराइडयुक्त पानी को न केवल पीने के लिए बल्कि खाना बनाने में भी काम लेते हैं। लेकिन यह बीमारी विकसित तब ही होती है जब पीने के पानी में फ्लोराइड की मात्रा 1.0 पी.पी.एम. अथवा 1.5 पी.पी.एम. से अधिक हो। यह मानक क्रमशः भारतीय मानक ब्यूरो व विश्व स्वास्थ्य संगठन ने निर्धारित किया है। लेकिन पीने के पानी में फ्लोराइड की मात्रा 1.0 पी.पी.एम. होने के बावजूद भी ग्रामीण राजस्थान के लोगों में ये विकृतियाँ देखी गई है। लम्बे समय से फ्लोराइड व फ्लोरोसिस पर शोध कर रहे ख्यातनाम वैज्ञानिक एमेरिटस प्रोफेसर डॉ. शांतिलाल चौबीसा जो अंतर्राष्ट्रीय जर्नल फ्लोराइड के क्षेत्रीय सम्पादक भी है ने निर्धारित इस फ्लोराइड की मात्रा को भारत की भौगोलिक स्थिति एवं जलवायु के परिप्रेक्ष्य में उचित नहीं माना है। इनके अनुसार इसकी अधिकतम सुरक्षित मात्रा 1.0 पी.पी.एम. से कम करने की जरुरत है। देश के 36 राज्यों एवं केंद्र शासित प्रदेशों में से 23 ऐसे हैं जिनका भूमिगत जल फ्लोराइड से दूषित है अर्थात् इनके कुओं, बावड़ियों, हेंड–पम्पों व बोर–वेल का पानी फ्लोराइडयुक्त है जो सेहत के लिए विषैला एवं बेहद नुकसानदेय है। राजस्थान समेत गुजरात, आन्ध्र प्रदेश व तेलंगाना ऐसे राज्य है जहाँ के करीब–करीब सभी जिलों का भूमिगत जल फ्लोराइड से दूषित है वहीं इसकी मात्रा भी निर्धारित मापदंडों से अन्य राज्यों की तुलना में कई गुना अधिक है।

फ्लोरोसिस से बचाव: देश में फ्लोरोसिस का नियंत्रण एक जबर्दस्त चुनौती है। फ्लोरोसिस न हो इसके लिए जरुरी है कि किसी भी स्थिति में फ्लोराइड को शरीर में जाने से रोकना होता है जो प्रमुख रुप से पानी द्वारा जाता है। फ्लोराइड का मुख्य स्त्रोत भूमिगत जल है जो गहरे कुओं, बावड़ियों, हेण्ड–पम्पों व बोर–वेल में मिलता है। इसलिए इन जल स्त्रोतों का पानी न तो खाना बनाने और न ही पीने के काम में लेना चाहिए। फ्लोराइड मुक्त स्वच्छ जल के लिए रेन–वाटर हार्वेस्टिंग या वर्षा जल संरक्षण भी बेहतर उपाय है। नालगोंडा डिफ्लोराईडेशन–तकनीक से भी पानी को फ्लोराइड रहित बनाया जा सकता है। तालाब, झील, नदी, नहीं जैसे सतही जल स्त्रोतों का पानी फ्लोराइड मुक्त होता है इसे मुहैया करा देने से फ्लोरोसिस समस्या का स्थाई निदान हो सकता है। लोगों को फ्लोरोसिस के प्रति जागरूक करने से इसके नियंत्रण में अपेक्षित सफलता मिलती है। भोजन में दूध, दही, पत्तेदार व फलीदार हरी सब्जियाँ, विटामिन सी युक्त फल जैसे संतरा, निम्बू, आँवला, इमली इत्यादि के समावेश करने से फ्लोराइड का असर कम होता है। शराब, चाय, तम्बाकू, सुपारी, पान का पता, काला व सेंधा नमक, प्रिजर्वड ज्यूस इत्यादि का सेवन से फ्लोरोसिस हो सकती है। क्योंकि इनमें फ्लोराइड की मात्रा अधिक होती है।

यदि किसी जगह सभी भूजल स्त्रोतों का पानी फ्लोराइड युक्त है तब ऐसी अवस्था में उस जल स्त्रोत का पानी ही पीने व भोजन बनाने के काम में लेना चाहिए जिसमें इसकी मात्रा सबसे कम हो। याद रहे फ्लोराइड धीमा ज़हर है। इसके बचाव में ही सुरक्षा है।

जय भारत, जय हिन्द, जय विज्ञान, जय अनुसंधान!

विश्वजीत जारोली
विभागाध्यक्ष, प्राणीशास्त्र विभाग

3 इडियट्स

जब फर्स्ट ईयर में मिले तब अन्जान थे
जो कब एक दूसरे की जान हो गये।
कभी सोचते थे तीन लेक्चर को कैसे निकालेगें ?
ना जाने कब यहाँ तीन साल पूरे हो गये।
कभी जिन लेक्चरर्र को देखकर रास्ता बदला करते थे,
आज वे ही हमारे फेवरेट हो गये।
वे ही दिन याद आयेंगे.....
फिर वो चाहे फर्स्ट ईयर की मस्ती हो
या लास्ट ईयर की धमाकेदार पी.यु.टी.।
फिर वो चाहे लंच का खाना हो
या क्लास भागने का बहाना हो।
फिर वो नींद से भरे लेक्चर हो
या लाइब्रेरी की खिड़की से कूदना हो।
फिर वो चाहे दोस्त का ताना हो
या कॉलेज बस में पीछे बैठ कर गाना हो।
फिर वो फेरवेल में सजकर आना हो
या फ्रेशरस् पर कपड़े ना होने पर सिर्फ लास्ट में आकर खाना हो।
फिर वो लास्ट का बाराती डान्स हो
या क्लास में होती कोई फाइट हो।
फिर वो चाहे एक्सटरनल से डर–डर के जाना हो
या घूम–घूमकर नो ड्यूज़ साइन कराना हो।
ये दिन बहुत याद आऐंगे.....
जिनमें हम अपने फनी फ्यूचर को पाऐंगे।

कृतिका सैन
अनुष्का शर्मा
चंचल प्रजापत
मोबिना बानो

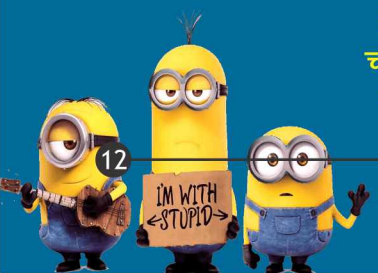

म्यूचुअल फण्ड में एस.आई.पी. निवेश एक बेहतर भविष्य

एस.आई.पी. नियमित रुप से निवेश के सिद्धान्त पर काम करता है। यह आपके आवर्ती जमा की तरह है जिसमें आप हर महिने कुछ छोटी राशि डालते हैं। यह आपको एक बार में भारी राशि निवेश करने की जगह म्यूचुअल फन्ड में कम अवधि का (मासिक या त्रैमासिक) निवेश करने की आजादी देता है। एस.आई.पी. आपको एक म्यूचुअल फन्ड में एक साथ 5000 रूपये के निवेश की बजाय इस राशि को 10 भागों में प्रति भाग 500 रूपये की भी सुविधा देता है।

एस.आई.पी. के लाभ

- **अनुशासित निवेश–** अपने धन कोष को सुरक्षित बनायें रखने के मुख्य नियम है कि लगातार निवेश करें, अपने निवेशों पर ध्यान केन्द्रित रखते हुए अपने निवेश के तरीके में अनुशासन बनाये रखें। हर महीने कुछ राशि अलग निकालने से आपकी मासिक आमदनी पर अधिक अन्तर नहीं पड़ेगा।
- **राशि के जुड़ते रहने की शक्ति–** निवेश गुरू सुझाव देते हैं कि एक व्यक्ति को हमेशा जल्दी निवेश शुरू करना चाहिए इसका एक मुख्य कारण है चक्रवृद्धि ब्याज मिलने का लाभ। चलिए इसे एक उदाहरण से जाने, रमेश (अ) 30 वर्ष की उम्र से 10000 रूपये हर साल बचाता है वहीं सुरेश (ब) भी 35 वर्ष की उम्र से इतना ही धन बचाता है लेकिन जब 60 वर्ष की उम्र में दोनों अपना निवेश की हुई राशि प्राप्त करते हैं तो (अ) का फन्ड 12.30 लाख होता है और (ब) का केवल 7.89 लाख होता है। इस उदाहरण में हम 8 प्रतिशत की दर से दर रिटर्न मिलना मान सकते हैं। तो ये स्पष्ट है कि शुरू में 50000 रूपये के निवेश का फर्क आखिरी फन्ड पर 4 लाख से ज्यादा का प्रभाव डालता है। ये राशि के जुड़ते रहने की शक्ति के कारण होता है। जितना लम्बा समय आप निवेश करेंगे उतना ज्यादा आपको रिटर्न मिलेगा। अब मान लीजिए कि (अ) हर वर्ष 10,000 निवेश करने की बजाय 35 वर्ष की उम्र में हर 5 वर्ष बाद 50,000 निवेश करता है इस स्थिति में उसकी निवेश किया धन उतना ही रहेगा जो कि 3 लाख है लेकिन उसे 60 वर्ष की उम्र में 10.43 लाख का फन्ड (कोष) मिलता है। इससे पता चलता है कि देर से निवेश करने में समान धन डालने पर भी व्यक्ति शुरू में मिलने वाले चक्रवृद्धि ब्याज के फ़ायदे को खो देता है।
- **रूपये की कीमत का औसत–** ये मुख्य रूप से शेयर में निवेश के लिए उपयोगी है। जब आप एक फन्ड में लगातार अंतराल पर समान धन का निवेश करते हैं तो रूपये की कम कीमत के समय में आप शेयर की ज्यादा यूनिट खरीदते हैं। इस प्रकार समय के साथ आपकी प्रति शेयर या प्रति यूनिट औसत कीमत कम होती जाती है।
- **सुविधाजनक–** ये निवेश का बहुत ही आसान तरीका है। आपको केवल पूरे भरे हुए नामांकन फॉर्म के साथ चेक या ई.सी.एस. का विकल्प भी उपलब्ध है पैसा कटने के बाद आपके खाते में शेयर यूनिट आ जाएगी।
- **अन्य लाभ–** एस.आई.पी. निवेश में पैसा डालने या निकालने पर कोई टैक्स या शुल्क नहीं है। इसमें कैपिटल गेंन पर लगने वाला टैक्स (जहाँ भी लागू होता है) निवेश करने के समय पर निर्भर करता है।

अविनाश तोतलानी
सहायक आचार्य, वाणिज्य संकाय

गुरू की महिमा

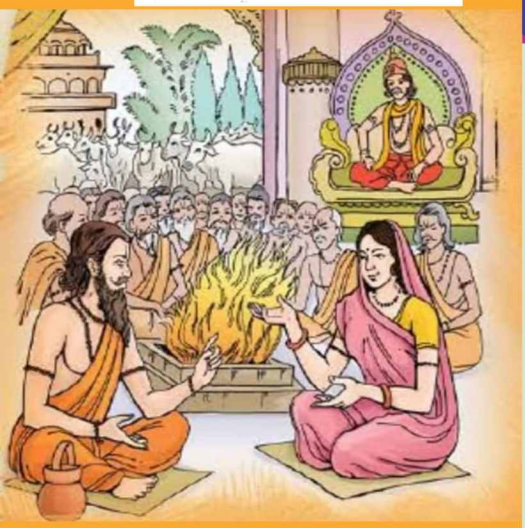

गुरू का ज्ञान तो आसमान है,
ऊँचाईयों को छूने का मुकाम है।
जो कुछ गुरू के पास है,
शिक्षा का भण्डार है।
आपका मेरी गलतियों को सुधारना,
और मेरी गलती पर फटकारना।
वो क्लास की मस्ती,
आपका हँसी मजाक।
दिल में आज जो भी सम्मान है,
सब कुछ आपके नाम है।
आपने इतना कुछ सिखाया है ,
जिन्दगी की बातों को बताया है,
ऐसे गुरू को मेरा शत–शत नमन।

रिद्धी दाधीच,
प्रथम वर्ष, बी.ए.बी.एड.

माँ

सभी पराये हो जाते हैं, होती नहीं पराई माँ।
लेती नहीं दवाई माँ, जोड़े पाई–पाई माँ।
दु:ख थे पर्वत जैसे पर, हारी नहीं लड़ाई में माँ।
इस दुनिया में सब मेले हैं, किस दुनिया से आई माँ।
पापा है थोड़े सख्त मगर, माखन और मलाई माँ।
दुनिया के सब रिश्ते हैं ठंडे, है गरमागरम रजाई माँ।
घर में चूल्हे मत बाँटों रे, देती रही दुहाई माँ।
रोती है लेकिन छुप–छुपकर, बड़े सब्र की जाई माँ।
घर के आँगन में खुशियाँ है माँ, है घर की शहनाई माँ।
सभी पराये हो जाते हैं, होती नहीं पराई माँ।

प्रियंका राजपुरोहित
प्रथम वर्ष, बी.ए.बी.एड.

साथ

खुशी से शुरू हुई थी, वो बस की कहानी,
सुना रहे थे सब घर की बातें अपनी जुबानी।
एक ने कहा मुझे माँ ने कही एक बात,
क्यों ना यह होली मनाता तु हमारे साथ।

इतने में किसी ने अपनी बात बताई,
कि सदकी पत्नी ने नई खबर सुनाई।
मेरी बेटी ने सबसे पहले पापा बुलाया,
और वही मैं सुन ना पाया।
तभी कोई ये कह कर रोया,
मैंने तो अपने बच्चो का पूरा बचपन ही खोया।

मेरा बेटा तो कहता है,
ना चाहिए मुझे कोई खिलौना।
बस चाहिए आपका साथ,
लौट आओ ना पापा मेरे पास।

यह कह कर सबने आँसूओं के साथ मुस्कुराया,
और यह सोचकर अपना मन बहलाया।
आज हमने यह सब खोया,
तभी तो मेरा देश चेन से सोया।

यह नए सपने अभी बन रहे थे,
तभी लग गई इन्हें नज़र,
और पुलवामा से आ गई,
हमारे वीरों के जाने की खबर

दहला दिया जैसे देश को,
आधे रास्ते पहुँचे हर उस संदेश को,
टूट गई माँ की इच्छा, पत्नी की खुशी,
छा गई हर ओर दुख की बेहोशी।

आज जो यह हो गया है,
हमने देश के वीरों को खो दिया है,
उन वीरों के मुँहसे यही निकला है।

हम तो चले गये,
अब आज के युवा ही कुछ पाऐंगे।
अगर यह बात दो दिन की सुर्खियों
में खत्म हो जाएगी,
तो क्या एक माँ फिर से अपने बेटे
को फौज में भेज पाएगी?

निकिता गुलाबानी,
द्वितीय वर्ष, कला संकाय

वर्तमान भारतीय राजनीति में धारा -370 एक दृष्टिगत विचार

यह एक ज्वलंत मुद्दा है जिसे लेकर पिछले कई दिनों से बहस जारी है कि इस धारा को समाप्त किया जाए या ना किया जाए क्योंकि यह एक बहुत ही खतरनाक धारा है। यदि इसको समय पर समाप्त नहीं किया गया तो आने वाले समय में भारत के लिए यह एक बहुत बड़ा खतरा बन सकती है। परन्तु बहुत कम लोग जानते हैं कि धारा 370 का इतिहास क्या है यह कब आई? क्यों आई? वर्तमान में इसको हटाने की मांग क्यों की जा रही है? इतना ही नहीं 14 फरवरी, 2019 को पुलवामा में हुए आतंकी हमले के बाद तो विभिन्न राजनीतिक दलों के बीच धारा 370 एक विवादास्पद मुद्दा बनती जा रही है।

धारा 370 भारतीय संविधान का एक ऐसा कानून है जिसके अनुसार जम्मू–कश्मीर को भारत के दूसरे राज्यों से अलग विशेष दर्जा प्राप्त है। जिस समय 15 अगस्त, 1947 को भारत स्वतंत्र हुआ था तब से लेकर आज तक यह धारा बहुत विवादों में रही है।

इतिहास दरअसल जब 1947 में भारत पाकिस्तान के बीच बँटवारा हुआ था उस समय जम्मू–कश्मीर के राजा हरिसिंह थे। राजा हरिसिंह स्वतंत्र रहना चाहते थे लेकिन उसी समय पाकिस्तान के जो समर्थक कबिलाई थे उन्होंने जम्मू–कश्मीर पर आक्रमण कर दिया। उसके बाद राजा हरिसिंह ने जम्मू–कश्मीर को भारत में शामिल करने की मांग की ताकि जम्मू कश्मीर को पाकिस्तान के आक्रमणों से बचाया जा सके। ताकि वहाँ पर रहने वाली प्रजा के जान एवं माल की रक्षा की जा सके। परन्तु उस समय भारत के पास इतना समय नहीं था कि वह कश्मीर को भारत में शामिल करने के लिए काम शुरु करे। परन्तु परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए संघीय संविधान सभा ने अपना काम कर दिया और नेहरू जी के चेले माने जाने वाले गोपाल स्वामी आयंगर ने धारा 306A का ड्राफ्ट प्रस्तुत किया जो आगे चलकर धारा 370 बन गयी। यद्यपि धारा 306A का ड्राफ्ट गोपाल स्वामी आयंगर ने प्रस्तुत जरूर किया था परन्तु इस ड्राफ्ट को खुद नेशनल कांग्रेस के नेता शेख अब्दुल्ला ने अपने हाथों से तैयार किया था। यही शेख अब्दुल्ला के हाथों में आगे चलकर महाराजा हरिसिंह को जम्मू कश्मीर का शासन सौंपना पड़ा। कहा जाता है कि सरदार पटेल को नेहरू जी ने इस बात से गुमशुदा रखकर धारा 370 लागू करवा दी और इसी वजह से जवाहर लाल नेहरू और सरदार पटेल के बीच की दोस्ती टूट गई।

चूँकि यह धारा बहुत खतरनाक थी इसलिए उस समय देश के कानून मंत्री और भारतीय संविधान निर्माता डॉ. भीमराव अम्बेडकर ने इस धारा को लागू करने से मना कर दिया परन्तु नेहरू के कहने से जम्मू कश्मीर में धारा 370 जबरदस्ती लग गई। जिसके कारण जम्मू कश्मीर को कुछ विशेष अधिकार मिल गए। 1951 में राज्य को संविधान सभा को अलग से बुलाने की अनुमति दी गई। नवम्बर 1936 में राज्य के संविधान का कार्य पूरा हुआ और 26 जनवरी, 1957 को जम्मू कश्मीर में विशेष संविधान लागू कर दिया गया।

क्या है धारा 370 के प्रावधान?

- धारा 370 के अनुसार जम्मू कश्मीर के नागरिकों के पास दोहरी नागरिकता होती है। एक जम्मू कश्मीर और दूसरी भारत की।
- जम्मू कश्मीर की विधान सभा का कार्य काल 6 वर्ष का होता है जबकि देश के अन्य राज्यों की विधान सभा का कार्यकाल 5 वर्ष का होता है।
- जम्मू कश्मीर में सुप्रीम कोर्ट के कानून को नहीं माना जाता है।
- धारा 370 की वजह से जम्मू कश्मीर में RTI, RTE और CAG लागू नहीं होता है।
- कश्मीर में महिलाओं पर शरियत कानून लागू है।
- कश्मीर में पंचायत के अधिकार नहीं हैं।
- धारा 370 के अनुसार जम्मू कश्मीर में राष्ट्रध्वज या राष्ट्रीय प्रतीकों का अपमान अपराध नहीं होता लेकिन अन्य किसी से सम्बन्धित को लागू करवाने के लिए केन्द्र को राज्य सरकार का अनुमोदन चाहिए। इसलिए कश्मीर में संविधान की धारा 356 लागू नहीं होती।
- भारतीय संसद जम्मू कश्मीर के सम्बन्ध में अत्यन्त सीमित

क्षेत्र में रक्षा, विदेश मामले और संचार के मामलों में कानून बना सकती है।

- यदि जम्मू कश्मीर की कोई लड़की भारत के किसी अन्य राज्य के लड़के से शादी कर लेती है तो उस लड़की की जम्मू कश्मीर की नागरिकता समाप्त हो जाती है और यदि जम्मू कश्मीर की लड़की पाकिस्तान के किसी लड़के से शादी कर लेती है तो उस लड़के को भी जम्मू कश्मीर की नागरिकता मिल जाती है।
- कश्मीर में रहने वाले अल्पसंख्यक जो कि हिन्दू और सिख है उनको 16 प्रतिशत आरक्षण भी नहीं मिलता है।
- इस धारा के अनुसार कश्मीर का कोई भी नागरिक भारत के किसी अन्य राज्य में जमीन खरीद सकता है परन्तु कश्मीर में बाहर के लोग जमीन नहीं खरीद सकते हैं। अर्थात् 1976 का शहरी भूमि कानून जम्मू कश्मीर में लागू नहीं होता है।
- धारा 370 के अनुसार जम्मू कश्मीर में राष्ट्रपति शासन लागू नहीं किया जा सकता और ना ही राष्ट्रपति के पास राज्य के संविधान को बर्खास्त करने का अधिकार है।
- भारतीय संविधान की धारा 360 जिसमें देश में वित्तीय आपातकाल लगाने का प्रावधान है, वह भी जम्मू कश्मीर पर लागू नहीं होता है।

डॉ. रूचि मिश्रा
सहायक आचार्य,
राजनीति विज्ञान विभाग

नीरव

आज एक माँ का मन नीरव सा था।
आशाऐं खामोश आंचल पत्थर सा था।।
खूब नाज़ और लाड़ प्यार था।
अब वही नहीं था जिसका सर्व था।।
कुछ अवशेष एक डिब्बे में बंद थे।
अरमान उस माँ के सपनों से थे।
अब जीवन क्या शेष था?
क्यूंकि उस डिब्बे में अपने लाल का अवशेष था।

आनंद कंवर
तृतीय वर्ष, कला संकाय

अनुच्छेद-35 A विशिष्ट जानकारी सहित

चर्चा में– जम्मू एवं कश्मीर में अनुच्छेद– 35A की संवैधानिकता को लेकर सुप्रीम कोर्ट में सुनवाई टल जाने के सुप्रीम कोर्ट में दायर तीन याचिकाओं में अनुच्छेद– 35A के कारण वहाँ विभिन्न वर्गों के साथ हो रहे भेदभाव का अनुमान लगाया गया एवं निरस्त करने की मांग उठी।

- 1956 के जम्मू कश्मीर के संविधान के अन्तर्गत अनुच्छेद– 35A में स्थायी नागरिकता को परिभाषित किया है।
- इस अनुच्छेद को संविधान के मूल भाग की बजाय परिशिष्ट में जोड़ा गया है।

35–A की परिभाषा– अनुच्छेद– 35A में जम्मू कश्मीर सरकार एवं वहाँ की विधानसभा को स्थायी निवासी की परिभाषा तय करने का अधिकार मिलता है।

- इसका मतलब जम्मू कश्मीर की राज्य सरकार को यह अधिकार है कि वो आजादी के वक्त दूसरी जगहों से आये शरणार्थियों और अन्य भारतीय नागरिकों को भारतीय राज्य जम्मू कश्मीर किस तरह की सहुलियत प्रदान करता है या नहीं करता है।

अनुच्छेद– 35 A क्या है?

- अनुच्छेद– 35A जम्मू कश्मीर विधानसभा को स्थायी नागरिकता की परिभाषा का अधिकार प्रदान करता है।
- अनुच्छेद– 35A को 14 मई, 1954 को तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद शर्मा के आदेश से संविधान में जगह मिली।
- सरकार ने धारा – 370 के अन्तर्गत प्राप्त शक्ति का इस्तेमाल इस अनुच्छेद– 35A को लागू करने में किया था।
- यह अनुच्छेद धारा 370 का हिस्सा है। इस धारा की वजह से कोई दूसरे राज्य का नागरिक न तो संपत्ति खरीद सकता और न ही स्थायी नागरिकता ले सकता है।
- अनुच्छेद 35 हटाने की मांग क्यों? – इसे खत्म करने की बात इसलिए हो रही क्योंकि इसे संसद के जरिये लागू नहीं किया गया।
- इसकी वजह से पाक विस्थापित शरणार्थी आज भी मौलिक अधिकार की पहचान से वंचित है। अनुच्छेद– 35A का जिक्र

संविधान की किसी भी किताब में नहीं मिलता। अनुच्छेद 35A (स्मॉल–ए) जरुर है लेकिन इस जम्मू कश्मीर से कोई सम्बन्ध नहीं है।

अनुच्छेद– 35A विपक्ष में तर्क –

- भारतीय नागरिकों के मूलभूत अधिकारों को सीमित करता है। नागरिकों के मौलिक अधिकारों को नगण्य करता है। साथ ही नैसर्गिक अधिकारों के प्रति विरोधाभास दिखाता है। इसे लागू करने की पद्धति अलोकतांत्रिक है।
- विधि के शासन का प्रथम सिद्धान्त है कि विधि के समक्ष देश का प्रत्येक व्यक्ति समान है एवं प्रत्येक व्यक्ति को विधियों के समान संरक्षण प्राप्त होना चाहिए।
- अनुच्छेद 14 के अन्तर्गत भारतीय संविधान विधि के समक्ष समानता की लिखित गारन्टी प्रदान करता है जबकि अनुच्छेद 35A में ही दोहरी विधिक व्यवस्था का जिक्र करता है।

अनुच्छेद 35A के पक्ष में तर्क –

- जम्मू कश्मीर की राज्य सरकार को वहाँ के निवासियों हेतु विशेष कानून बनाने का अधिकार देता है।
- भारतीय नागरिकों (अन्य राज्यों के) के मौलिक अधिकारों को प्रभावित करता है। केवल इस आधार पे चुनौती नहीं दी जा सकती।
- इस अनुच्छेद के तहत राज्य विधायिका के अधिकार असीमित नहीं है केवल रोजगार, संपति एवं छात्रवृत्ति के मामले में अधिकारों का प्रयोग किया जा सकता है।
- घाटी में हालात अत्यन्त ही संवेदनशील है और इन हालातों में इसे खत्म करना कश्मीरियों के भारत से जुड़ाव को ज्यादा कमजोर करना होगा।

सुरेश कुमार शर्मा,
सहायक आचार्य, इतिहास विभाग

पुलवामा की धरती

पुलवामा की धरती पर आज काला ये सवेरा है,
शहीदों के सिर पर सधा मौत का सेहरा है।
उस दर की मिट्टी भी आज चीख–चीख कर रोई है,
उस सैनिक की बेटी भी आज भूखी ही सोई है।
ममता के आँसू से वो आंगन भी भीग रहा,
अब तो शहीदों से लिपटा तिरंगा भी चीख रहा ।
हर हिन्दुस्तानी का खून खोल रहा,
कश्मीर का कोना कोना बोल रहा।
शत् शत् नमन शहीदों को उस माँ को मेरा सलाम है,
शोला पैदा किया तुने, बेटा तेरा आज भी जवान है।
सुन पाकिस्तान चंद साथियों को गिराकर मत कर तू इतना गुरूर,
जंग तुने छेड़ी है बदला लेने आयेंगे जरूर।
फिर उजड़ेंगे सुहाग बहेगी खून की नदियाँ,
बदले का ये जवाब याद रखेगी सदियाँ।
कुछ नहीं उजड़ा हमारा लाखों बेटे तैयार है,
तुम्हारे पास कायर लाशें हमारे पास जिंदा हथियार है।
सुनो भेडियों हम पीठ से वार नहीं करते सामने से आयेंगे,
ईंट का ज़वाब पत्थर सा देकर जायेंगे।
उठो मेरे वीरों मिलकर एक नया बीज बोये,
ताकी सपूत को खोकर हिन्दुस्तानी माँ कभी ना रोए।
उठो मेरे भाईयों शौर्य तिलक लगाओ,
पौछ उन बहिनों के आँसू को अपनी राखी की शोभा बढ़ाओ।
खून की नदियाँ हम पाकिस्ताान में बहायेंगे,
तभी हम सच्चे हिन्दुस्तानी कहलायेंगे।

स्वाति जैन
तृतीय वर्ष, विज्ञान संकाय

अध्यापक शिक्षा में नवाचारिक प्रवृत्तियाँ

हमारे भारत में करीब 12 लाख से भी अधिक अध्यापक–अध्यापिकाऐं व प्रशिक्षार्थी हैं। पिछले कई वर्षों में राज्य एवं केन्द्र सरकार ने पहल की है कि शिक्षकों की क्षमता को मजबूत करने का प्रयास किया जाए। मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार ने एक शिक्षक मंच बनाने का प्रस्ताव रखा है। इसका लाभ शिक्षक, शिक्षाविद्, प्रशासक, शिक्षा के क्षेत्र में सरकारी व गैर–सरकारी संगठन आदि सभी उठा पायेंगे। हमारे शिक्षक व छात्र शिक्षक सभी सीखने के लिए केन्द्रीय है एवं वे अपने व्यवहार में प्रभावी भी होना चाहते हैं, परन्तु प्रशिक्षण निश्चित स्थानों पर सभी शिक्षकों तक नहीं पहुँच सकता है। शिक्षा प्रणाली अप्रासंगिक, पुरानी और सबसे महत्त्वपूर्ण दोहरावाड़ी होने के कारण शिक्षकों को सामग्री लाने व निर्णय लेने का विकल्प नहीं है। इन सभी समस्याओं को स्वीकार करते हुए कई नवाचार जो कि उपयोग करने की क्षमता खोज रहे है। भारत में अध्यापक शिक्षा के क्षेत्र की क्षमता खोज रहे हैं। भारत में अध्यापक शिक्षा के क्षेत्र में एक व्यापक परिवर्तन, आधुनिक प्रवृत्तियों एवं नवाचारों की विस्तृत श्रृंखला उभरकर हमारे समक्ष आयी है, जिसने अध्यापक के मूल्यों को भी प्रभावित किया है। वर्ष 2016 शिक्षा जगत के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण व जीवन्त वर्ष रहा है। इस वर्ष कई नवीन प्रवृत्तियाँ एवं कार्यक्रम हुए हैं, जिन्होंने शिक्षा परिदृश्य को बेहतर तरीके से आगे बढ़ाया है। शिक्षक – प्रशिक्षक और विकास के लिये प्रौद्योगिक शिक्षक देशभर में तकनीक की समझ रखने वाले भी तेजी से बढ़ रहे हैं। इस वर्ष कुछ बेहतरीन आधुनिक प्रवृत्तियाँ हमारे समक्ष उपस्थित हुई है जो सम्पूर्ण शिक्षा परिदृश्य पर कई वर्षों तक आच्छादित रहने वाली है जिनमें मोबाईल एप्लीकेशन, वेब पोर्टल, शाला दर्पण पोर्टल, ऑनलाइन चर्चा मंच ये सभी नवाचार है। नवाचार को शिक्षकों में विकसित करने के लिए समय–समय पर शिक्षकों में व्यावसायिक अभिवृत्ति के विकास हेतु विशेष नवाचार कार्यक्रम आयोजित किए जाने चाहिए। जिनसे शिक्षकों को उपयोग का ज्ञान, भावी अध्यापकों हेतु उपयोगी सिद्ध हो सकता है। स्वयं निर्देशित व्यावसायिक विकास हेतु अनेक अन्त: क्रिया आधारित गतिविधियाँ संचालित की जानी चाहिए। जैसे – सेमीनार, वेब आधारित सेमीनार, विडियो प्रकाशित लेख, कार्यशालाएं आदि से भी नवाचारिक प्रवृत्तियाँ उभरकर हमारे सामने आती है। नवाचारिक प्रवृत्तियों में डिज़िटल क्रान्ति को उत्प्रेरित करने के लिए मानव संसाधन विकास मंत्रालय ने राष्ट्रीय शिक्षक मंच विकसित करने का प्रस्ताव रखा। यह सभी शिक्षकों को किसी भी समय कहीं भी उपलब्ध होगा। उच्च स्तर पर राष्ट्रीय शिक्षक मंच में निरंतर सीखने के लिए संसाधन, प्रगति व मूल्यांकन के लिए डैशबोर्ड, चर्चा मंच, परिपत्र, सूचनाओं के लिए उपकरण आदि शामिल होंगे जो सम्पूर्ण भारत वर्ष के शिक्षकों व छात्रों को एक दूसरे से जोड़ने में महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करेगा। इसी श्रृंखला में एक नवीन प्रवृत्ति या नवाचार मिश्रित अधिगम भी है जिसमें प्रशिक्षणार्थी पाठ्यक्रम का एक भाग कक्षा में पूरा करते हैं तथा दूसरा भाग डिज़िटल एवं ऑनलाइन संसाधनों का उपयोग या प्रयोग करके सिद्ध करते हैं। शिक्षकों का व्यावसायिक विकास, शिक्षा की गुणवत्ता को बढ़ाने के लिए देशभर में ऑनलाइन व ऑफलाइन शिक्षण उपागमों के संयोजन के माध्यम से शिक्षकों के व्यावसायिक विकास व गुणवत्तापूर्ण प्रशिक्षण पर ध्यान केन्द्रित करना महत्त्वपूर्ण होगा। युवा व्यस्कों के लिये द्विभाषीय अधिगम सामग्री पहले से कहीं अधिक प्रासंगिक या सार्थक सिद्ध होगी। वर्तमान परिवेश में जिस प्रकार विद्यार्थियों में नैतिक मूल्यों का पतन हो रहा है और अनुशासनहीनता, असंतोष की प्रवृत्ति, क्रोध, हिंसात्मक प्रवृत्तियाँ बढ़ रही है।

इसे देखते हुए यह आवश्यक हो जाता है कि नैतिक मूल्यों का प्रशिक्षण प्रत्येक स्तर पर दिया जाना अनिवार्य किया जाये और भावी शिक्षकों को इस प्रशिक्षण को देने में निपुण बनाया जाये। जिससे वर्तमान प्रशिक्षणार्थियों में नैतिक मूल्यों का विकास किया जा सके। इस प्रकार शिक्षा को प्रभावी, सुगम, सरल, सहज और वर्तमान समय के अनुरुप बनाने के लिए शिक्षक तथा शिक्षार्थियों के लिए नवाचारिक प्रवृत्तियों का उपयोग करना आवश्यक ही नहीं बल्कि महत्त्वपूर्ण भी है।

कोमल पारीक
सहायक आचार्य, राजनीति विज्ञान, शिक्षा विभाग

शिक्षा मनोविज्ञान: एक परिदृश्य

प्राचीन शिक्षा प्रणाली वर्तमान, आधुनिक शिक्षा प्रणाली से पूर्णतया भिन्न है। प्राचीन शिक्षा प्रणाली में बालक का स्थान महत्त्वपूर्ण नहीं था। केवल मात्र बालक को कठोर अनुशासन के साथ निर्धारित समय में और औपचारिक पाठ्यक्रम के आधार पर मात्र व्याख्यान द्वारा ही ये शिक्षा दी जाती थी। परन्तु आधुनिक शिक्षा प्रणाली पूर्णतया भिन्न है। आधुनिक शिक्षा प्रणाली बाल केन्द्रित शिक्षा प्रणाली है, जिसमें विद्यार्थी को सर्वोपरी माना गया है। शिक्षण विधियाँ, पाठ्यक्रम सभी विद्यार्थी को केन्द्र मानकर निर्मित की जाती है। वर्तमान शिक्षा प्रणाली के अनुसार शिक्षक केवल एक मार्गदर्शक की तरह होता है जो विद्यार्थी के लिए मात्र ज्ञान का निर्माण करने का मार्ग प्रशस्त करता है तथा ज्ञान का निर्माण विद्यार्थी स्वयं करता है। विद्यार्थी को स्वतन्त्र रहने देना चाहिए। यह अवधारणा शिक्षा मनोविज्ञान की ही देन है। मनोविज्ञान विद्यार्थी को स्वतन्त्र शैक्षिक वातावरण प्रदान करने पर बल देता है, ना कि कठोर अनुशासन में रखने पर। यह बाल केन्द्रित शिक्षा, शिक्षा मनोविज्ञान की ही देन है। शिक्षा मनोविज्ञान इस बात पर बल देता है कि बालक जितनी अधिक ज्ञानेन्द्रियों का उपयोग करता है, उतना ही उसका ज्ञान अधिक स्थायी होता है। अत: केवल व्याख्यान विधि से ही शिक्षण प्रक्रिया को प्रभावी नहीं बनाया जा सकता। अपितु प्रभावी शिक्षण प्रक्रिया के लिए विभिन्न शिक्षण विधियों का प्रयोग किया जाना चाहिए। शिक्षक के सम्बन्ध में पूर्व में यह धारणा थी कि एक सफल शिक्षक के लिए अपने विषय का ज्ञान होना ही काफी है, किन्तु आज बाल केन्द्रित शिक्षा में एक सफल शिक्षक के लिए अपने विषय का समुचित ज्ञान, शिक्षार्थी का ज्ञान, शिक्षण विधियों का ज्ञान तथा शिक्षा के विभिन्न उद्देश्यों का ज्ञान आवश्यक है और इस प्रकार के ज्ञान में मनोविज्ञान का विशेष महत्त्व है।

शिक्षा प्रणाली में शिक्षकों को बाल–उद्यान का कुशल माली कहा जाता है। शिक्षा मनोशिक्षक को यह निर्णय करने में सहायता देता है कि वह विशिष्ट परिस्थितियों में अपनी विशिष्ट समस्याओं का समाधान किस प्रकार करे। शिक्षा मनोविज्ञान यह तथ्य प्रस्तुत करता है कि विद्यार्थी किसी भी कार्य को करने का जितना अधिक प्रयास व प्रयत्न करता है, वह उस कार्य में उतना ही दक्ष व निपुण होता चला जाता है। साथ ही शिक्षा मनोविज्ञान यह भी मान्यता रखता है कि यदि अधिगम प्रक्रिया में विद्यार्थी को पूनर्बलन दिया जाता है, तो अधिगम प्रक्रिया अत्यधिक तीव्र गति से होती है जिससे बालक में अच्छी आदतों को निर्मित व विकसित किया जा सकता है तथा नकारात्मक पुनर्बलन की सहायता से अवांछनीय आदतों को कम व समाप्त किया जा सकता है जो कि पूर्ण रुप से सत्य है। जब बालक के सामने कोई समस्या आती है तो वह उसका समाधान करने के लिए पूर्ण सूझ–बूझ का उपयोग करता है तथा समस्या का समाधान स्वयं खोजता है और यह तथ्य शिक्षा मनोविज्ञान के सिद्धान्त का प्रतिफल है। मनोविज्ञान में होने वाले अनुसंधानों ने स्पष्ट कर दिया है कि बालकों की रूचियों, योग्यताओं, क्षमताओं आदि में अन्तर होता है। अध्यापक को इस अन्तर वाले बालकों को शिक्षा देनी होती है। शिक्षा मनोविज्ञान के अध्ययन से शिक्षक बालकों की व्यक्तिगम विभिन्नताओं से अवगत हो जाता है।

बालक के मस्तिष्क के अनुसार ही उसकी मानसिक शक्तियाँ व व्यवहार होता है। मनोविज्ञान में बालक की मानसिक प्रक्रियाओं में यथा संवेदना, अवधान, स्मरण शक्ति प्रत्यक्षीकरण, चिन्तन शक्ति, तर्क कल्पना, प्रत्यय निर्माण, अनुसंधान शक्ति जैसी मानसिक प्रक्रियाओं का अध्ययन किया गया है। शिक्षा मनोविज्ञान से छात्रों के व्यवहार, बुद्धि, निष्पत्ति अभिरूचि आदि का मापन करता है व इसके आधार पर उनके व्यवहार की भविष्यवाणी की जाती है। विद्यार्थी और अध्यापक दोनों के लिए मूल्यांकन आवश्यक है। विद्यार्थी जानना चाहता है कि उसकी शैक्षिक उपलब्धि क्या है? अध्यापक जानना चाहता है कि वह विद्यार्थी को जो ज्ञान दे रहा है, उसमें कहाँ तक सफल हुआ है। शिक्षा मनोविज्ञान द्वारा ऐसी अनेक प्रविधियों का ज्ञान अध्यापक को होता है, जिनके माध्यम ये वह स्वयं अपनी तथा छात्रों की प्रगति से परिचित हो सकता है।

इस प्रकार शिक्षा मनोविज्ञान ने शिक्षा के क्षेत्र में एक क्रान्ति ला दी है। शिक्षा मनोविज्ञान ने शिक्षा को एक नया स्वरुप प्रदान किया है। जिसके परिणामस्वरुप वर्तमान में बालक को शिक्षा प्रक्रिया में प्रमुख स्थान पर एक आनन्ददायी तथा सक्रिय भागीदारी वाली शिक्षण प्रक्रिया द्वारा बालक के सर्वोत्तम एक सर्वांगीण विकास का मार्ग शिक्षा मनोविज्ञान द्वारा प्रशस्त किया गया है।

रुचि चौहान
सहायक आचार्य, प्राणी विज्ञान, शिक्षा विभाग

याद

सर्दी के मौसम में, अधिकतर नींद खुल जाती है।
हर दिन, पलभर में, ये वहम तोड़ जाती है।
थक किसी की उंगलिया मेरे बालो को सहलाती है, मालूम पड़ता है जब सुबह की, मंद पवन इस तरह लहराती है, माँ !
तब तुम्हारी बहुत याद आती है।
हजारों बच्चों को देखती हूँ, कॉलेज में,
यूँ तो दूर रहने की आदत सी हो गई है,
बाहरी खाना तो अब जीवन शैली बन गई है, स्वाद जीभ को आता नहीं।
ध्यान चीज पर जाता नहीं, माँ !
तब तुम्हारी बहुत याद आती है।
कॉलेज से निकलते ही देखती हूँ कि स्कूल की घंटी पर छोटे बच्चे एक दिशा में दौड़े चले जाते हैं।
जहाँ उनके इन्तजार में कोई खड़ा है, जिसकी अँगुली पकड़कर वे आश्वस्त हो जाते है।
जब नज़र अपनी सूनी हथेली पर चली जाती है, माँ !
तब तुम्हारी बहुत याद आती है।
दिन के चौबीसो घंटे, हर मिनट, हर सैकण्ड, जब घड़ी की सुईयाँ टिक–टिक करती जाती है।
माँ ! तब तुम्हारी बहुत याद आती है।

देवश्री जैन
सहायक आचार्य, विज्ञान संकाय

प्रदूषण परिप्रेक्ष्य में गंगा नदी

गाँवों के घटाव और शहरों के फैलाव ने हमारे सम्मुख जिन समस्याओं को खड़ा किया है, उनमें से नदी प्रदूषण एक बड़ी समस्या है। आज गंगा, ब्रह्मपुत्र, यमुना, गोमती, कावेरी जैसी देश की समस्त प्रमुख नदियों का जल शहरी क्षेत्रों में ग्रामीण एवं वनीय क्षेत्रों की तुलना में अधिक प्रदूषित पाया जा रहा है। इसी क्रम में देश की सबसे महत्त्वपूर्ण पवित्र और राष्ट्रीय नदी गंगा जो अपने 2525 किमी के बहाव में 17 शहरों से होकर गुजरती है, कभी इसके जल में बेक्टीरियोफांस जनित रोग निवारक क्षमताओं के साथ ही स्वत: शुद्धिकरण की क्षमता पाई जाती थी, गंगा के प्रवाह क्षेत्र के इन नगरों की आबादी का घनत्व बहुत अधिक है। इन नगरों में कल–कारखानों का भी बाहुल्य है, जिसके कारण आज नदी मात्र जल स्त्रोत न होकर प्रदूषकों के निकास स्त्रोत में बदल चुकी है। गंगा की गुणवत्ता में गिरावट की जानकारी 1960 में ही चर्चा में आ गई थी जिसे तत्कालीन प्रधानमंत्री इन्दिरा गाँधी ने संज्ञान में लेकर 1971 में गंगा नदी की गुणवत्ता की व्यापक जाँच का निर्देश दिया, इस निर्देश के परिप्रेक्ष्य में केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड ने 1984 में गंगाजल का विभिन्न स्थानों पर परीक्षण के उपरान्त दो बडी सूचना जारी की जो आगे चल कर गंगाजल शुद्धिकरण परियोजना गंगा एक्शन प्लान की मूल आधार बनी गंगा प्रदूषण निवारण प्रक्रिया के महत्व को ध्यान में रखकर यद्यपि वर्तमान सरकार ने भी गंगा के लिए एक अलग ही मंत्रालय बना दिया है। लेकिन इन सबके बावजूद गंगाजल की गुणवत्ता में कोई खास सुधार नहीं हुआ।

परन्तु आज हमारी वर्तमान सरकार गंगा प्रदूषण के प्रति अपनी विशेष कार्य योजना नमामि गंगे को लेकर सामने है। इस परियोजना के तहत केन्द्र सरकार का पहला बजट रू 2037 करोड़ का है। इस परियोजना के अन्तर्गत 8 राज्यों के 47 कस्बों और गंगा सम्बधित बारह अन्य नदियों पर काम किया जाना है। सरकार इस कार्य के लिए 2022 तक 1632 के करीब गाँवों को खुले में शौच से मुक्ति दिलाना चाहती है। गंगा ज्ञान केन्द्र, नदी के अनुकूल कृषि व्यवस्था के निर्माण और गंगा क्षेत्र के लिए उपयुक्त सिंचाई प्रणाली की व्यवस्था करना जैसे उद्देश्य भी शामिल है। गंगा एक्शन प्लान की विफलताओं के बाद नमामि गंगे परियोजना के परिप्रेक्ष्य में हमें इस बात पर गम्भीरतापूर्वक ध्यान रखना होगा कि हम कहीं एक बार पुन: असफलता का वरण तो नहीं कर रहे हैं। ध्यान रहे प्रदूषणकारी तत्त्व भूमि के माध्यम से ही नदी में प्रवेश करते है इसलिए नदी क्षेत्र की भूमि एवं उस पर होने वाली गतिविधियों पर ध्यान देना अत्यन्त आवश्यक है वर्षों से क्रियाशील गंगा स्वच्छता अभियान की विफलता के बाद भी हमने पूर्ववर्ती अनुभवों के मद्देनजर व्यवहार परक प्रक्रिया नहीं अपनाई, तो कोई जरुरी नहीं कि नमामि गंगा का हाल भी गंगा एक्शन प्लान के जैसा न हो जाए।

सीता जाट
प्रथम वर्ष, बी.ए.बी.एड.

हिन्दुस्तान

ना भूले हैं, ना माफ करेंगे,
अब न दया का कोई स्थान है।
लगी अस्मिता दाव पे देश की,
यह नर–संहार का परिणाम है।
सो गए हैं आज वो,
जो मस्तक थे हिमाचल का,
खो गए है आज वो,
जो चाँद थे आसमान का ।
लगाकर ग्रहण वो चन्द्र पर,
कब तक अपना उजाला लेंगे।
होगा जब रवि उदय,
तब जल भस्म वो होंगे।
करके अपने घर में अंधेरा,
वो कब तक सोएगें,
ज्वालामुखी जब फूटेगा,
तो खून के आसूँ रोयेंगे।
हाँ, हाँ अब युद्ध होगा,
अब भीषण नर–संहार होगा।
कटेगा सिर तो भी धड़ लड़ेगा,
न भूले हैं हम कारगिल।
न भूले हैं छब्बीस ग्यारह,
अब सब का बराबर हिसाब होगा।
उठो–जागो बढ़ो सीमाओं को तोड़ो तुम,
माँ पुकार रही है कुछ तो बोलो तुम।
बुला रहे हैं वो जो सो गए तिरंगे में,
बुला रहे हैं वो जो लेट चुके हैं कफ़न में।

दीपिका जोशी
प्रथम वर्ष, बी.ए.बी.एड.

नारी सशक्तिकरण

आज हम सब जानते हैं कि महिलाओं के बिना हम अपनी दैनिक दिनचर्या में सही से प्रदर्शन नहीं कर सकते। महिलाएँ घर में केवल हमारा भोजन बनाने, हमारे कपड़े धोने और अन्य कार्यों को करने के लिए जिम्मेदार होती है। समाज और परिवार में केवल महिलाओं को ही सुबह जल्दी उठने, घरेलू कामकाज करने, व्रत रखने और पूरे परिवार की भलाई और समृद्धि के लिए पूजा करने का माध्यम माना जाता है। आखिर क्यों? ये बहुत हास्यास्पद हैं कि उन्हें बचपन से ही घर के कार्यों और जिम्मेदारियों को निभाने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है, जबकि पुरूषों की तरह नेतृत्व करने के लिए हतोत्साहित किया जाता है। आखिर क्यों? हम सभी प्रत्येक सवाल का जवाब जानते हैं। हालांकि इस पर सोचना और चर्चा करना नहीं चाहते क्योंकि पुरूष सभी क्षेत्रों में केवल घर की जिम्मेदारी को छोड़कर महिलाओं पर हमेशा अपना आधिपत्य रखना चाहते हैं।

देश के युवा और भविष्य होने के नाते हम देश की नई पीढ़ी जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में महिलाओं के साथ कदम मिलाकर चलने के द्वारा अपने उज्ज्वल भविष्य को सुनिश्चित करना चाहिए। जैसा कि हमने इतिहास में पढ़ा है कि महिलाओं ने प्राचीन समय में भी बहुत सी सामाजिक, चुनौतियों का सामना किया है और उन्हें केवल परिवार और समाज तक ही सीमित रहने के लिए मजबूर किया जाता था। लोग सोचते थे कि महिलाऐं केवल रुपये निवेश और परिवार की आर्थिक स्थिति को कमजोर करने का स्त्रोत है, हालांकि वे ये नहीं सोचते कि महिलाऐं आधी शक्ति हैं जो पुरूषों के साथ मिलकर पूरी शक्ति बन सकती है। महिलाओं को अपने दिल और दिमाग से मजबूत होने के द्वारा खुद को भी सशक्त करने की आवश्यकता है। जिस तरह से वो दैनिक जीवन की चुनौतियों का सामना करती है, तो वो उनके सशक्तिकरण और उन्नति को सीमित करने वाली सामाजिक और पारिवारिक कठिनाईयों का भी सामना कर सकती है। हमें प्रत्येक दिन जीवन की हरेक चुनौती को गले लगाना सीखना होग। हमारे देश में नारी सशक्तिकरण के खराब प्रदर्शन के कारण लिंग असमानता आने लगी है। आँकड़ों के अनुसार ये देखा गया है कि देश के बहुत से भागों में ये लगातार गिरा है और 100 पुरुषों की तुलना में केवल 850 स्त्रियाँ है। लैंगिक समानता और नारी सशक्तिकरण दोनों ही विकास और उच्च आर्थिक स्थिति को प्राप्त करने के लिए बदलाव ही महत्त्वपूर्ण रणनीति है।

तोड़ के हर पिंजरा, जाने कब मैं उड़ जाऊँगी,
चाहे लाख बिछा लो बंदिशें, फिर भी आसमान में अपनी जगह बनाऊँगी,
हाँ गर्व है मुझे मैं नारी हूँ।

प्रेरणा त्रिपाठी,
प्रथम वर्ष, बी.एस.सी.बी.एड.

बदलते परिदृश्य में सामाजिक मूल्यों का अस्तित्व चुनौतीपूर्ण

भारतीय समाज और संरचना में प्रतिमान और मूल्य महत्त्वपूर्ण आधार स्तम्भ है और इसीलिए प्रत्येक सामाजिक प्राणी से यह अपेक्षा की जाती है कि वह सामाजिक मूल्यों की इस विरासत को संजोए रखने की अपेक्षाओं पर खरा उतरे। सामाजिक जीवन और इसके अस्तित्व को बनाए रखने के लिए इन मूल्यों का पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तान्तरण भी जरूरी है लेकिन वर्तमान और बदलते परिदृश्य में भारतीय समाज के इन चिरपरिचित मूल्यों को बचाएं और बनाए रखना चुनौतीपूर्ण है। मूल्यों के संकट को जानने से पहले यह समझना भी जरूरी है कि आखिर इन सामाजिक मूल्यों की आधारशिला कैसे रखी जाती है और कैसे यह हमारे और सामाजिक जीवन के अस्तित्व के लिए जरूरी हो जाते हैं।

एक बच्चे (सावयव) के जन्म से उसके सामाजिक प्राणी बनने की एक वृहद् प्रक्रिया होती है जिसे हम समाजीकरण के नाम से जानते हैं। इस प्रक्रिया से बच्चों को वह सब कुछ सिखाने का प्रयास किया जाता है जो कि सामाजिक रूप से अपेक्षित है, मसलन उसे न केवल यह सिखाया जाता है कि क्या और कैसे बोलना है बल्कि उसे इन संभावनाओं से भी रूबरू कराया जाता है कि किससे, कब, क्या और कैसे बोला जाता है। यह इसलिए किया जाता है, ताकि सामाजिक व्यवस्था बनी रह सके। सामाजिक ताना–बाना जीवित रहे और समाज में सन्तुलन भी बना रहे। इस तरह एक बच्चे के सीखने में सामाजिक मूल्यों की समझ बनायी जाती है। खासतौर पर परिवार, शिक्षण और अन्य संस्थाएँ सामाजिक मूल्यों की इसी समझ को स्थापित और हस्तान्तरित करने में अपना अभिन्न योगदान देती है। अक्सर सीखने–सिखाने की इस प्रक्रिया पर कई सवाल भी खड़े किए जाते हैं, इन सवालों की शुरूआत इस अर्न्तद्वन्द्व से होती है कि क्या सब कुछ सीखना जरूरी है या वैसा ही करना जरूरी है जैसा बताया गया है, क्या हम अपनी इच्छा का नही कर सकते। इस अर्न्तद्वन्द्व से अन्तर्पीढ़ी और सामाजिक संघर्ष तक के सफर का असर समायोजन के रूप में सामने आता है और जिसे 'कुछ आप झुको तो कुछ हम' की कसौटी पर रखा और मापा जाता है। यही वह स्थिति है जहाँ नयी पीढ़ी द्वारा चिरपरिचित मूल्यों को अनदेखा करने के साथ उन्हें अस्वीकार करने का प्रयास किया जाता है। हालांकि बाहरी दुनिया और संचार के साधनों का प्रभाव भी मूल्यों की सुस्थिरता के लिए चुनौतियाँ बढ़ानें में कोई कसर नहीं छोड़ता है।

सच्चाई तो यह है कि ईमानदारी, भाईचारा, सहयोग, आत्मीयता, सहानुभूति, परानुभूति, नैतिकता, प्रेम, अपनत्व, एक दूसरे को और अपने बड़ों को सम्मान देने जैसे मूल्यों को बनाए रखना आज अत्यन्त ही चुनौतीपूर्ण है और अपराध, दुर्व्यवहार, अत्याचार, अमानवीयता, शोषण, सम्मान नहीं देना और स्वयं–श्रेष्ठता (नृजाति केन्द्रीयता) की भावना लगातार बढ़ती जा रही है। ऐसे समय में यह समझना जरूरी हो जाता है कि आखिर समाज किस दिशा में गतिमान हो रहा है और इसके भविष्य की क्या संभावनाएँ व्यक्त की जा सकती है ? इस जटिल समय में सामाजिक मूल्यों को संरक्षित करने में परिवार की भूमिका निश्चय ही अतिमहत्त्वपूर्ण है। वर्तमान युग तकनीकी युग है जहाँ संचार के साधनों और इससे जुड़े परिवर्तनों का बच्चों पर अत्यधिक प्रभाव पड़ता है, हालांकि इसके लिए हम भी जिम्मेदार है इसीलिए मोबाईल, इन्टरनेट और अन्य स्त्रोतों के सकारात्मक उपयोग के साथ अभिभावकों द्वारा बच्चों को गुणवत्तापूर्ण समय देकर उन्हे समाज के मूल्यों की समझ और आवश्यकता से परिचित कराना चाहिए। शिक्षा और शिक्षक भी समाज में बदलाव के प्रमुख अभिकरण और अग्रदूत है, शिक्षण संस्थाओं और शिक्षकों द्वारा भी मूल्यों की गहराई और अनिवार्यता से विद्यार्थियों को रूबरू कराना चाहिए। इस बदलते दौर में विद्यार्थियों में सामाजिक मूल्यों में समझ की कमी कहे या उन्हें दरकिनार करने की प्रवृति, उन्हे बार–बार सामाजिक मूल्यों को याद दिलाना पड़ता है। ऐसे में महात्मा गाँधी, स्वामी विवेकानन्द, स्वामी दयानन्द सरस्वती, रवीन्द्रनाथ टैगोर, विनोबा भावे और इस तरह के दार्शनिकों के जीवन मूल्यों को न केवल पढ़ाने बल्कि उसे आन्तरीकृत कराने की आवश्यकता है। महात्मा गाँधी की 150 वीं जन्म शताब्दी वर्ष को याद करते हुए अभिभावक–बच्चों, शिक्षक–विद्यार्थियों को यह प्रण लेने की आवश्कता है कि हम भारतीय संस्कृति की इस मूल्य रूपी विरासत को संजोए रखने में नि:संदेह अपना योगदान देंगे क्योंकि मूल्यों की यह विरासत ही हमें वैश्विक पहचान दिलाती है और दिलाती रहेगी।

डॉ.मितेश जुनेजा
सहायक आचार्य, समाजशास्त्र विभाग

उरी
द सर्जिकल स्ट्राईक फिल्म:
एक समीक्षा

जम्मू में कश्मीर के बारामूला के उरी में 18 सितम्बर, 2016 को सेना कैम्प पर हमला हुआ था । यह आतंकवादियों द्वारा हुए आज तक का सबसे कायराना हमला माना जाता है क्योंकि इस हमले में जम्मू के कैम्प में चैन की नींद सो रहे सेना के जवानों को जिंदा जला दिया गया। इस हमले में भारतीय सेना के 19 जवान शहीद हो गये थे। इसी का बदला भारतीय सेना ने 28 व 29 सितम्बर को पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर में सर्जिकल स्ट्राइक के जरिए लिया।

उरी द सर्जिकल स्ट्राइक के नाम से आदित्य धार की इस फिल्म में विक्की कौशल, यामी गौतम, परेश रावल, मोहित रैना, कीर्ति कुल्हारी आदि अभिनेताओं ने महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है।

फिल्म की शुरूआत 4 जून, 2015 के दिन से होती है जब नेशनल सोश्यल काउंसिल ऑफ नागालेण्ड द्वारा भारतीय सेना के एक ट्रक पर हमला किया जाता है। इसके बाद 10 को भारतीय सेना ने म्यांमार में जा कर एक सर्जिकल स्ट्राइक की थी। फिल्म की पूरी कहानी आर्मी के अफसर विक्की कौशल और मोहित रैना के इर्द–गिर्द घूमती है दोनों ही भारतीय सेना के जवान है जो कि खास तरह से प्रशिक्षित है और खास मिशन को अंजाम देते हैं ।

इसमें इंटेलीजेंस ऑफिसर यामी गौतम सेना की कमाण्डर कीर्ति कुल्हारी भी उनकी मदद करती है। इसमें पठानकोट में हुए आतंकवादी हमले इसके बाद देश में कैसे एक के बाद एक आतंकवादी घटनायें होती चली गई वो सारी घटनायें मूवी में दिखाई गई हैं और अंत में कैसे निर्णय लिया गया सर्जिकल स्ट्राइक में दिखाया गया है। जिसे पूरा पीएम मोदी ने लीड किया था।

उरी केवल भारत ही नहीं आज तक की बनी वॉर फिल्मों में सबसे बेस्ट मूवी है। फिल्म के फर्स्ट हॉफ में पठानकोट आतंकी हमले में शहीद होते हैं तो उनकी बेटी का रोना देखकर मेजर मोनो रायजी की बेटी का रोना याद आ जाता है। मेरी दोनों ही आँखों से आँसू बह रहे थे। खून खोल रहा था, गुस्सा था, अंदार का वो गुस्सा यह देखकर शांत हुआ है। यह फिल्म भारतीय जवानों को एक ट्रीब्यूट फिल्म है।

- फिल्म देशभक्ति से ओतप्रोत है। फिल्म के सभी पात्रों ने अपने–अपने अभिनय के माध्यम से सभी का दिल जीत लिया है।
- फिल्म में अजीत डोबाल का नाम गोविन्द रखा गया है जो कि राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार थे ।
- फिल्म की जान विक्की कौशल (विहान) है, वह इस मूवी में रियल आर्मी ऑफिसर लगते हैं और उन्हें उठकर सेल्यूट करने का मन करता है ?
- योगेश सोमंत ने तत्कालीन रक्षा मंत्री मनोहर परिकर की भूमिका निभाई है उन्हें देखकर लगता है जैसे रक्षा मंत्री ने स्वयं भूमिका निभाई हो ।
- फिल्म में आधुनिक हथियारों का उपयोग किया गया है जब भारतीय सेना नाइट विजन गूगल्स लगाकर सर्जिकल स्ट्राइक के लिए निकलती है तो ऐसा लगता है जैसे हम विडियो गेम देख रहे हों।

कमजोर पक्ष

- फिल्म में एंडिंग को जल्दी खींचा गया है। फिल्म में दिखाया गया कि भारतीय सेना 3 बजे ही अपना ऑपरेशन पूरा करके निकल जाती है। जबकि वास्तविकता सर्जिकल स्ट्राइक ऑपरेशन प्रातः 5 बजे तक चलता है और भारतीय सेना एलओसी को पार सूर्योदय के बाद करती है।
- मध्य में 2 घण्टे के लिए उन का सम्पर्क ही टूट गया था। उस समय मूवी दर्शकों को डरा सकती थी वह नहीं कर सकी ।
- मूवी में नरेन्द्र मोदीजी की भूमिका रजत कपूर ने निभाई थी किंतु मोदीजी की वह धीर गंभीर आवाज, उनके चेहरे का तेज यह सब वह पर्दे पर नहीं उकेर सके ।

इस फिल्म में राष्ट्र की झलक तो दिखती है परन्तु इससे दुश्मन देशों को यह तो पता चल जायेगा कि भारत के सामने उनकी सोच काफी लघुता लिए हुए है।

पूजा कंवर राठौड़
तृतीय वर्ष, कला संकाय

शीश

ऋणी है हम उन जवानों के,
जो सरहदों पर अपना जीवन बिताते हैं
फ़र्ज के नाम पर देखो कैसे–कैसे यह वीर
मुस्कुराकर मौत को गले लगाते हैं।

हम मनाते दीवाली पटाखों के संग
और होली पर रंग उड़ाते हैं।
कलेजा है हमारे वीरों का
जो हर त्योहार गोले–बारूद के बीच मनाते हैं ।

मंदिर मस्जिद के नाम पर
गए हम धर्मों में बाँटे हैं।
न दोहराना यह गलती हमारे सैनिकों के संग
क्योंकि यह सिर्फ तिरंगे के आगे शीश झुकाते हैं।

शमा परवीन
द्वितीय वर्ष, विज्ञान संकाय

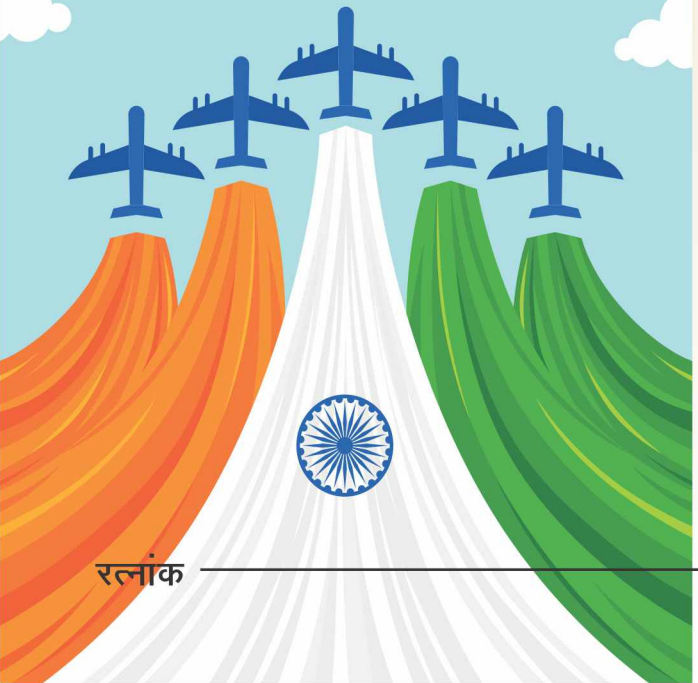

जीवन

जीवन में संघर्ष बहुत है,
चलती है विपरीत हवाऐं।
फिर भी आगे बढ़ते जाये,
मानवता का सार बताये ।।

अप्रिय कटुक वचन नहीं बोले,
मीत भाव से पहचानें।
राह मिलेंगे पथिक बहुत से,
प्रेम भाव को संवारे।।

मिलजुल कर रहना सीखें,
वात्सल्य की धार बहे।
स्नेह प्रेम बाँटते रहना,
खुशियों का विस्तार करें।।

दीन–दरिद्री होय अभाग, अपने गले लगा लेवें।
हर प्राणी में प्रभु को देखें, सबके हित का ख्याल करें।।

हिंसा झूठ कुशील त्याग दें, परिग्रह का परिमाण करें।
क्षण–भंगुर यह काया–माया, शाश्वत प्रेम दुलार करें।।

बैर–पाप ईर्ष्या को त्यागें, मन में समता भाव धरे।
स्व पर का हम भेद मिटा दें, सर्व जीव कल्याण करें।।

हो जाये मतभेद किसी से, कभी नहीं मन भेद करें।
जीवन में वैमनस्य न पालें, क्षमा सुधा का पान करें।।

'रुचिका' हरदम बीन बजाना, वाणी–वाणी काम करें।
नहीं वाण प्रहार हो घातक, जीवन का कल्याण करें।।

रुचिका जैन
प्रथम वर्ष, विज्ञान संकाय

जीवन में संस्कार व आचरण

संस्कार अर्थात् आचरण और व्यवहार, परिष्कार, शुद्धता अथवा पवित्रता हम अपने बड़े बुजुर्गों से सीखते हैं। संसार में आने वाली प्रत्येक संतान चाहे व मनुष्य हो या जानवर पूर्णतया: निर्विकार कोरा कागज किन्तु उसका मानस पटल सब कुछ सीखने के लिए आतुर अवश्य होता है। जिज्ञासा उसके व्यवहार की मूलभावना में निहित होती है। उसमें ना किसी अच्छे संस्कार का चिन्ह् होता है और ना ही किसी बुरे प्रभाव, बुरे संस्कार का प्रभाव अर्थात् संतान अपने आस–पास होने वाली घटनाओं और दृष्टिगोचर व्यवहारों से संस्कार ग्रहण करता है और वह संस्कार अपने माता–पिता और परिवार से लेता है। परिवार के पश्चात् समाज की बारी आती है। जो बातें माता–पिता के मुख से निरंतर सुनी जाती है, उसका आचरण ही उनमें देखा जाता है। संतान तथा अनुसार ही उन्हें अपने आदर्श बना लेते हैं और यही आदर्श और व्यवहार संतान में संस्कारों का स्वरूप लेती है जैसे पानी को भिन्न–भिन्न आकृति वाले पात्र में डालते हैं तो वही जल अपना आकार पात्र के अनुकूल बदलता है यदि जल को किसी स्वच्छ जल में विलय करें तो स्वच्छ ही रहता है यदि उसे गंदे जल में विलय किया जाए तो वह भी गंदा और दूषित हो जाता है। संस्कार भी इसी प्रकार से होते हैं। यदि उसे अच्छी संगति मिलती है तो अच्छी आदत बन जाती है और बुरी संगत का परिणामता आप जानते ही हैं।

एक भारतीय संस्कृति में हम संस्कारों को इस उदाहरण से बहुत सरलतापूर्वक समझ सकते हैं। जब कोई संत, महात्मा, याचक, भिखारी, फकीर दरवाजे पर जब भिक्षा मांगने आते हैं तो मैं उसको एक कटौरी आटा देते हुए मुस्कुराते हुए सुख की अनुभूति करती हूँ। पास ही खड़ा बालक अपनी माँ को निहारता है यह पाता है कि उसकी माँ देखकर प्रसन्न हुई है, यही संस्कार उस बालक के अंदर आ जाते हैं संस्कारों की उत्पत्ति बिना कुछ कहे प्रारंभ हो जाती है।

किंतु तथापि जब संतान में कोई दोष दिखाई देता है तो माता–पिता आश्चर्य और चिंतित हो जाते हैं। वे साचते हैं कि उनकी संतानों में यह कुसंस्कार आए तो आए कहाँ से ? किन्तु यह सत्य हैं कि माता–पिता अपनी संतानों को जाने अनजाने में ही ऐसे संस्कार प्रदान कर देते हैं जो उन्हें स्वयं को भी पता नहीं होता। यह प्रत्येक माता–पिता का कर्त्तव्य है उनको संस्कारों पर जैसे बड़ों का आदर करना, अनुशासन और शिष्टाचार संतानों में परिलक्षित व दृष्टिगोचर होते हैं।

आज के इस भौतिक युग में माता–पिता के पास इन छोटी–छोटी महत्वपूर्ण बातों को अपनी संतानों तक पहुँचाने का समय नहीं है। संस्कार के नाम पर घर में रखा टीवी, बच्चों के दोस्त, नौकर–चाकर, पास–पड़ौस के लोगों का व्यवहार ही उसके संस्कार निर्माण में माता–पिता से ज्यादा भूमिका निभाते हैं। जबकि अच्छे संस्कारों का प्रारंभ माता–पिता और परिवार से होना चाहिए। एक बार यदि बच्चे ने अपने परिवार और माता–पिता से सीख लिया कि अच्छा क्या होता है और बुरा क्या होता है तो फिर उसे अधिक आवश्यकता इस बात की नहीं रहती कि वह बाहर जाकर किसी दुर्गुण को अंगीकार करेगा।

शैक्षिक संस्थानों की भूमिका आज के युग में बहुत अधिक बढ़ गई है क्योंकि आज के माता–पिता के पास अपनी संतानों के लिए समय नहीं बचा है प्रत्येक माता–पिता को इस संदर्भ में गहन गंभीर चिंतन करना चाहिए।

तनुजा बुनकर
प्रथम वर्ष, विज्ञान संकाय

लोकतंत्र : एक आदर्श शासन व्यवस्था

विश्व में संचालित समस्त शासन व्यवस्थाओं में से लोकतंत्र अथवा जनतंत्र उच्च कोटि की शासन व्यवस्था है लोकतंत्र का सामान्य अर्थ जनता का शासन होता है अर्थात् जहाँ जनता की शासन व जनता ही शासित होती है लोकतंत्र की सर्वाधिक मान्य व सारगर्भित परिभाषा सर्वप्रथम अमेरिकी राष्ट्रपति अब्राहिम लिंकन द्वारा दी गई थी उनके अनुसार ''लोकतंत्र जनता का जनता द्वारा शासन होता है।'' उपर्युक्त परिभाषा से स्पष्ट है कि जनता ही लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था का केन्द्र बिन्दु है उसकी अनुमति से ही शासन होता है।

जहाँ राजतंत्रात्मक, अधिनायकवादी, शासन व्यवस्थाओं में जनता के हितों का शोषण किया जाता है, उन पर भीषण अत्याचार किए जाते है। शासन व्यवस्था में उनकी भागीदारी नगण्य समझी जाती है, उनके राजनैतिक अधिकारों का हनन किया जाता है। वहीं लोकतंत्र अथवा जनतंत्र में जनता के हितों को प्राथमिकता दी जाती है तथा शासन व्यवस्था में उनकी भागीदारी सुनिश्चित करने के साथ ही साथ उनके राजनैतिक व कानूनी अधिकारों की रक्षा भी की जाती है। परन्तु लोकतंत्र केवल एक विशिष्ट प्रकार की शासन प्रणाली ही नहीं है वरन् एक सामाजिक, नैतिक, मानसिक भावना का भी नाम है जिसका उद्देश्य प्रत्येक व्यक्ति का सर्वांगीण विकास कर राष्ट्र को प्रगति के पथ पर ले जाना है। विभिन्न शासन व्यवस्थाओं का तुलनात्मक अध्ययन करने पर भी हम यहीं पाते हैं कि लोकतंत्र अपने आदर्शों व उद्देश्यों के कारण ही विश्व की सर्वाधिक लोकप्रिय व आदर्श शासन व्यवस्था है। न्यायप्रियता, पारदर्शिता, लोक कल्याण का भावना, राष्ट्र की प्रगति आदि श्रेष्ठ गुणों के कारण ही लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था को विश्व के अधिकतर देशों में स्वीकार कर लिया गया है जो लोकतंत्र के एक आदर्श शासन व्यवस्था होने के पक्ष में प्रमाण है।

उत्तम कंवर
प्रथम वर्ष, बी.ए. बी.एड.

मोबाईल

वंशिका जैन
प्रथम वर्ष, विज्ञान संकाय

कहीं नहीं अब आना जाना,
मोबाईल ने बदल दिया हमारा जमाना।
कागज कलम हुए पुराने, बंद हुए अब चिट्ठी खत,
अपनों से बातें करने की, नहीं रही अब किसी को फुरसत ।
दोस्तों से बातें करनी हो तो, जरा व्हाट्स–अप पर आ जाना,
कहीं नहीं अब आना जाना,
मोबाईल ने बदल दिया हमारा जमाना।
नहीं सुबह की चहल–पहल, चारों और सूना लगता, गली मुहल्ले अब लगते खाली,
मोबाईल के आ जाने से, खत्म हुई अब दूरी सारी।
उंगलियों से अपना काम करते इस इंटरनेट की महिमा भारी ।
लेन–देन सब आसान हो गया, घर बैठे ही सब मंगवाना,
कहीं नहीं अब आना–जाना,
मोबाईल ने बदल दिया हमारा जमाना ।

ऐतिहासिक परिदृश्य में कला एवं संस्कृति को संजोए हमारा किशनगढ़

16वीं सदी के आरंभ में जब दिल्ली सल्तनत पतन की ओर अग्रसर थी तब राजपूताना क्षेत्र के राजपूतों की शक्ति का पुनरोदय हुआ। यहाँ राजपूत जाति के विविध कुलों के कई छोटे–बड़े राज्य अपने–अपने कुलों की शक्ति, प्रभाव और राज्य विस्तार की नीति को सदैव सक्रिय रखने का प्रयास करते रहे थे। इसी राजपूताना क्षेत्र में राठौड़ राज्य के रूप में उस समय किशनगढ़ राज्य का उदय हुआ जो आज भी अध्यात्म, दर्शन एवं चित्रकला की धरोहर के रूप में पहचाना जाता है। किशनगढ़ राज्य की स्थापना से पूर्व हमें इसके नामकरण पर विचार करना आवश्यक होगा। राज्यों के नामकरण के लिए सामान्यतः भारतवर्ष में, संस्थापक के नाम में पहले व अंत में पुर, मेरे, नेर, सर बाद एवं गढ़ इत्यादि लगाने की परम्परा रही है। राजस्थान में भी इसी परम्परा का अनुकरण किया गया है। कर्नल जेम्स टॉड के अनुसार 'कुछ जागीरें राज्य की सीमा के बाहर बस गई जो जागीर के नाम पर रखा गया।' इनमें किशनगढ़ और रतलाम मालवा क्षेत्र में आता है। किशनगढ़ राज्य के संस्थापक 'कृष्णगढ़' नाम के उत्तरार्द्ध में स्थित सिंह के स्थान पर 'गढ़' प्रयुक्त कर, 'कृष्णगढ़' नामकरण किया गया। कृष्णगढ़ का अपभ्रंश रुप किशनगढ़ कहलाया।

किशनगढ़ राज्य की उत्पत्ति मारवाड़ से हुई है। किशनगढ़ मारवाड़ की पूर्वी सीमा पर स्थित था। कर्नल जेम्स टॉड ने इसे उचित अध्ययन के अभाव में भ्रमवश मालवा में माना है। यह तथ्य विरूद्ध बात है क्योंकि मालवा के मध्य में तो एक अन्य प्रमुख राजधानी बोली मेवाड़ी का पूरा विस्तृत क्षेत्र है। समग्र राजस्थान प्रान्त के संदर्भ में देखा जाये तो ठीक मध्य में किशनगढ़ की स्थिति है। किशनगढ़ राज्य की स्थापना उस समय हुई जब मुगल साम्राज्य लगभग समस्त उत्तर भारत में विस्तार पा चुका था और अकबर का पुत्र जहांगीर उस समय शासक था। अकबर ने अपनी बुद्धि, कूटनीति एवं ताकत के बल पर राजपूताना के राजा–महाराजाओं को अपने अधीन कर लिया था। तत्कालीन जोधपुर नरेश महाराजा उदयसिंह (1583 से 1593 ई.) से अकबर के घनिष्ठ एवं पारिवारिक सम्बन्ध थे।

राजा उदयसिंह की सत्रह रानियाँ थी, कर्नल टॉड के अनुसार उदयसिंह के 16 पुत्र होने का उल्लेख मिलता है। राजा उदयसिंह के पुत्रों ने भारतवर्ष के कई, राज्यों एवं जागीरों में शासन किया है, जिनमें किशनगढ़ एक है। किशनगढ़ राज्य राजस्थान का हृदयस्थल है, जिसके संस्थापक, महाराजा किशनसिंह, जोधपुर महाराजा उदयसिंह के आठवें पुत्र थे। किशनसिंह जयपुर राज्य एवं मुगल बादशाह अकबर के प्रति सदैव स्वामीभक्त बने रहे फिर भी वे यह नहीं चाहते थे कि कोई राज्य उन पर शक्तिशाली बन जाए। इसलिए वे एक छोटे राज्य का निर्माण करना चाहते थे, जिस पर मुगल बादशाह का नियंत्रण रहे। एक वीर राजपूत की भांति उनकी धारणा थी कि राजपूत का वास्तविक राज्य उसकी तलवार और उसका पुरूषार्थ है। जब मुगल सम्राट अकबर को इस वीर राजपूत युवक की प्रतिभा का पता चला तो उन्होंने वि. सं. 1654 (1597 ई) में किशनसिंह को हिण्डौन क्षेत्र का शासक बनाकर राजा की पदवी से विभूषित किया। राजा किशनसिंह अकबर के जीवनकाल तक हिण्डौन के शासक बनें रहे किन्तु उनके स्वाभिमान को यह रूचिकर न लगा कि किसी के द्वारा दिए गये राज्य पर आजीवन राज करते रहे। 1605 में अकबर की मृत्यु के बाद कविराज श्यामलदास के अनुसार, कृष्णगढ़ राज्य की स्थापना किशनसिंह के द्वारा वि. सं. 1666 (1609 ई.) की बसंत पंचमी के दिन गुंदोलाव झील के सुरम्य तट पर पहाड़ियों के मध्य मनमोहक वातावरण में की गई थी।

श्रुति पारीक
सहायक आचार्य, वनस्पति विज्ञान विभाग

ठंड में एंटीबॉयोटिक है ग्रीन गार्लिक का सूप

ग्रीन गार्लिक का सूप इम्यून सिस्टम को बूस्ट करने में मदद करता है। यह एंटीबॉयोटिक और इंफ्लामेंट्री का काम करता है। यह विटामिन सी सहित लिपोप्रोटीन के फंक्शन को बढ़ाने में भी मदद करता है।

विधि–

पैन में थोड़ा सा मक्खन डालकर सभी सब्जियों को थोड़ा सा भून लें और चार गिलास पानी डालकर उबलने दें। 15 मिनट उबलने के बाद उसें कॉर्न फ्लॉवर ठण्डे पानी में धोलकर डाल दें और उसके बाद नमक, काली मिर्च डाल दें।

न्यूट्रीशियन वैल्यू 1 कप = 136 ग्राम

कैल्शियम	–	203 मिली ग्राम
फेट्स	–	1 ग्राम
कार्बोहाइड्रेट	–	45 ग्राम
प्रोटीन	–	9 ग्राम
कैलोरीज	–	45 ग्राम

खाँसी, जुकाम में पियें लौकी का सूप

सर्दियों में जूस के बजाय सूप लेना ज्यादा फायदेमंद है। बाहर का तापमान यदि ज्यादा हो तो ठण्डा होने के कारण अगर हम जूस ना लेकर सूप लें तो अधिक फायदेमंद रहता है अगर हम सूप लेते हैं तो वह हमारे शरीर में अच्छी तरह से आब्जर्व हो जाता है। इस मौसम में लौकी का सूप ना सिर्फ हमें हैल्थी रखता है बल्कि यह हमें कई बीमारियों से भी बचाता है। यह सूप वजन कम करने में मदद करता है।

कब्ज, गैस्टिक प्रॉब्लम जैसे–अल्सर, पेट के छाले, लीवर की बीमारियों, खाँसी, जुकाम, पाइल्स में फायदेमंद हैं।

बनाने की विधि

लौकी का छिलका उतार लें। एक कप पानी में उबाल लें। इसके बाद इसे मिक्सी में पीस लें। मक्खन में कॉर्न फ्लॉवर मिलाकर भून लें। उसमें लौकी का पीसा हुआ रस डालकर अच्छी तरह से उबाल लें। फिर इसमें नमक, बादाम की कतरन डालें। गर्म–गर्म सर्व करें।

न्यूट्रीशियन वैल्यू

100 ग्राम लौकी में लगभग 15 कैलोरीज विटामिन सी, बी, 1 ग्राम फेट, आयरन, 10 ग्राम डाइटरी फाइबर और पानी, 96 प्रतिशत होता है। इसमें माइक्रो न्यूट्रीशियन भी काफी मात्रा में पाए जाते हैं।

रानी शाहिन
सहायक आचार्य, गृह विज्ञान विभाग

सेब का जैम

आवश्यक सामग्री–सेब 1 कि.ग्रा., पानी 200 मि. ली., साइट्रिक एसिड 7–8 ग्राम, चीन–750 ग्राम, औरेंज रेड कलर तथा एमरन्ध कलर आवश्यकता के अनुसार, सेब अथवा मिक्स फ्रूट एसेन्स (सुगंध) 20 बूंद ।

विधि–जैम बनाने के लिये खट्टे सेब उपयुक्त रहते हैं। फलों के छिलके सहित काटकर प्रेशर कुकर में 200 ग्राम पानी मिलाकर 4–5 सिटी आने तक पकाने के बाद स्टील या एल्यूमीनियम की छलनी द्वारा छान लें । छने हुए गूदे के साथ लगभग बराबर की मात्रा में चीनी, आवश्यक मात्रा में दोनों प्रकार के रंग मिला दें तथा पकते समय लगातार चलाते रहे। थोड़ा गाढ़ा होने पर साइट्रिक एसिड अथवा समान मात्रा में टार्टरी मिला दें ।

1. प्लेट टेस्ट–यह पूर्णतः घरेलू पहचान है। इस विधि के अन्तर्गत पकते हुए जैम में बहुत थोड़ा जैम किसी प्लेट पर रखकर ठण्डा करके प्लेट को टेढ़ा करते है, जब प्लेट पर रखा हुआ जैम एक ही दिशा में सरकने लगे तब जैम तैयार मानते हैं।
2. थर्मामीटर द्वारा–जब पकते हुए पदार्थ का तापक्रम 222 डिग्री फॉरेनहाइट हो जाए।
3. रिफरैक्ट्रोमीटर द्वारा–जब पकते हुए पदार्थ में चीनी की मात्रा लगभग 68–70 प्रतिशत हो जाए ।
4. भार द्वारा–सामान्यतः प्रयोग की गई चीनी से तैयार जैम, लगभग डेढ़ गुना बनता है।

किसी भी विधि द्वारा जैम के तैयार होने की पहचान होने के बाद गैस बंद कर दें तथा आवश्यक मात्रा में एसेन्स मिलाने के बाद चौड़े मुँह के उपयुक्त जार में गर्म–गर्म भर दें । अब आप इसका उपयोग कर सकते हैं।

अनुराधा शेखावत
गृह विज्ञान विभाग

ऐतिहासिक दृष्टि से राम सेतु का महत्त्व

राम सेतु रामायण से जुड़ी सबसे बड़ी निशानी राम सेतु के बारे में हमने सुना कि रामायण के समय में लंका पर चढ़ाई करने के लिए वानर सेना ने समुन्द्र में पत्थर का एक सेतु बनाया। लेकिन सवाल यह है कि वास्तव में राम सेतु बनाया गया था ? अगर खोजा जाये तो क्या आज भी उसके अस्तित्व को खोजा जा सकता है ? रामायण के अनुसार धनुष कोठी ही वह जगह है जहाँ राम सेतु की नींव रखी गई थी। जहाँ आज भी राम सेतु के देखे जाने का दावा किया जाता है। राम सेतु भारत और श्रीलंका के बीच में सत्तरह लाख साल पहले श्रीरामजी का बनाया गया वो पुल जिस पर से वो लंका गए थे और विजय कर वापस लौटे थे। 1480 के साल में एक भयंकर सुनामी आई थी। उसमें राम सेतु समुन्द्र के नीचे चला गया था। रिकॉर्ड के अनुसार भारत और श्रीलंका के बीच का जो व्यापार होता था वो राम सेतु के ऊपर से होता था। राम सेतु 35 मील लंबा है और साढ़े तीन मील चौड़ा है।

नासा के वैज्ञानिकों के अनुसार राम सेतु– आधुनिक शिक्षा के लोगों ने यह माना है कि राम सेतु मात्र एक कल्पना है। लेकिन नासा के वैज्ञानिकों ने अब यह सिद्ध किया है कि यह सब सत्य है। बस इतना फर्क है कि राम सेतु पहले समुन्द्र के ऊपर था और अब समुन्द्र के नीचे है लेकिन डूबने के बाद भी वह टूटा नहीं है इसके विषय में उन्होंने बताया कि उस पुल के पत्थरों को किलों से जोड़ा गया है और किले इस प्रकार की है कि लाखों साल पानी में रहने पर भी खत्म नहीं हुई, कहीं–कहीं पत्थर के बीच में चूना लगाया गया है सीमेन्ट का उपयोग नहीं था। आश्चर्य की बात यह है कि चूने और किलों से जोड़े पत्थर टूटे नहीं है और पूरे पुल में दरार नहीं आई और इस पुल की एक और विशेषता है कि यह पुल 2 सेप में बनाया गया है। नासा के वैज्ञानिकों का मानना है कि शायद दुनियाँ के पुल बनाने का तरीका भारत से सीखना चाहिए क्योंकि इसमें पहले पूरी दुनियां ऐसे पुल के अवशेष नहीं मिलते हैं।

राम सेतु आज के युग में प्रासंगिक– आज के युग में राम सेतु से भारतीयों को इंजीनियरिंग सीखनी चाहिए। हमारे पास कुछ ऐसे रेडियो एक्टिव ईंधन हैं। कम से कम पाँच ईंधनों का पता चला है। एक ईंधन तो इतना ज्यादा है कि ए. पी. जे. अब्दुल कलाम ने कहा है कि 150 साल तक 4 लाख मेगा वॉट बिजली हर घंटे बना सकें इतना हमारे पास रेडियो एक्टिव ईंधन है। जहाँ यह रेडियो एक्टिव ईंधन है वो जगह है राम सेतु। राम सेतु अंग्रेजी शब्द की आकृति में बनाया गया है और आज जो पुल बनते हैं वह सीधे बनते हैं।

शायद राम सेतु के आकृति में इसलिए बनाया गया क्योंकि समुन्द्र के पानी का बहाव बहुत तेज होता है और इसे समान रुप से बाँटा जा सके। क्योंकि इसमें कई दीवार आ जायेगी और उसका जीवन बढ़ जायेगा। इतनी वैज्ञानिकता भारतीयों में आज से लाखों वर्षों पहले भी थी। क्योंकि इससे पहले दुनियाँ में ऐसा पुल नहीं बनाया गया और शायद दुनियाँ को पुल बनाने कि कला व तरीका भारत से ही मिला।

राजश्री चारण
प्रथम वर्ष, कला संकाय

जीवन में योग और अध्यात्म

भारतीय धर्म और दर्शन में योग का अत्यधिक महत्व है। आध्यत्मिक, आत्मिक, शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य के लिए योग की आवश्यकता को सभी धर्मों में स्वीकार किया गया है। योग शब्द की उत्पत्ति संस्कृत शब्द ''युज'' से हुई है। जिसका अर्थ है ''जुड़ना'' होता है। आध्यात्मिक स्तर पर जुड़ने का अर्थ है सार्वभौमिक चेतना के साथ व्यक्तिगत चेतना का एक होना।

पतंजलि के अनुसार मन और अध्यात्म का मेल योग है, जहाँ आप अपने मन को ध्यान में लीनकर शांति का अनुभव करते हैं। पतंजलि ने योग के द्वारा आध्यात्मिकता की और जाने के आठ मार्ग बताये हैं।

यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, ध्यान, धारणा और समाधि, यम और नियम योगी के विचारों और भावनाओं को नियंत्रित है। आसन शरीर को सुदृढ़ एवं स्वस्थ रखता है। यह तीनों योग की बहिरंग अवस्थाऐं हैं। प्राणायाम तथा प्रत्याहार योगी को सांसों का संचालन सिखाती है। जिनमें मन नियंत्रित होता है। यह दोनों योगा की अतरंग अवस्थाऐं कहलाती हैं।

धारणा, ध्यान और समाधि द्वारा योगी से स्वयं से जुड़ता है। वर्तमान में योग शिक्षा की बेहद आवश्यकता है क्योंकि सबसे बड़ा सुख शरीर का स्वास्थ्य होना है। यदि आपका शरीर स्वस्थ है तो आपके पास दुनियाँ की सबसे बड़ी दौलत है। स्वस्थ व्यक्ति ही देश और समाज का हित कर सकता है। अतः काम की भाग–दौड़ की जिदंगी में खुद को स्वस्थ एवं ऊर्जावान बनाए रखने के लिए योग बेहद आवश्यक है। योग के ङ्कभाव को देखते हुए आप चिकित्सक एवं वैज्ञानिक योग को अपनाने की सलाह देते हैं। योग हमारे, तन, मन, आत्मा एवं आध्यात्मिक उन्नति के लिए लाभदायक है।

भावना चतुर्वेदी
पुस्तकालय विज्ञान विभाग

कोरा कागज़

एक समन्दर सा उमड़ा था शब्दों का मन में,
सोचा कुछ छींटे कागज़ पे ही डाल दूँ

तभी बुद्धू सा सवाल आया मन में
कि कहीं कागज़ गीला हो गया तो ?

तभी दिल को समझाते हुए कहा
कागज़ होता है गीला तो होने दो

पहले मैं अपने दिल के अरमान तो निकाल लूँ
सिर्फ अपने मन की खुशी के लिए
तू इस कागज़ को बर्बाद करेगा

यह कागज बर्बाद ना हो इसलिए तो लिख रहा हूँ
शायद मेरे लिखे शब्दों से इस कागज़ को
जमाना याद करेगा।

अल्का मेघवंशी
तृतीय वर्ष, कला संकाय

रिश्ता

आज हर करीबी रिश्ता है एक दूसरे से जुदा,
चंद कागज के टुकड़ों को मान लिया है खुदा।
वो एक युग था जब भाई था भाई की जान,
आज सिर्फ दिखानी है समाज में झूठी शान।
हर रिश्ता चंद कागजी टुकड़ों में बंधा,
पैसों के लालच ने हर किसी को किया अंधा।
वह भी तो एक युग था, यह भी एक युग है,
हर बेटा था समान कहती थी माँ।
क्या मान लिया जाए इसे 'वक्त का सितम'
खुशी के सब साथी, दुःख में अनजान है हम।

सुहानी जैन
द्वितीय वर्ष, वाणिज्य संकाय

खिलौना

मैंने एक गरीब को
उसका खिलौना खुद बनाते देखा,
उस छोटे से खिलौने के साथ
उसे खिलखिलाते देखा ।
कहने को उसने कुछ खास नहीं किया था,
बस टूटे डिब्बे को रस्सी से जोड़ दिया था ।
उसी में पत्थर भरकर वो भाग रहा था,
जीवन का नवउत्साह उसमें जाग रहा था।
कितना दिया है विधाता ने हमें पर हमें दूसरों,
का अपार लगता है ।
आदत है हमारी स्कूल कॉलेज से लौटकर रोज,
वहाँ की कमियां गिनवाना।
मैंने देखा है, ऐसे बच्चों को भी
जो मेरे कंधों पर बस्ता,
देखकर स्कूल के लिए तरस जाते हैं।
हमें फुर्सत नहीं है फरमाइशों से,
और वो अंजान है, ख्वाइशों से।
एक हम है जो इस मिट्टी को गंदगी बताते हैं,
लोग ऐसे भी है जो इसी में जिंदगी बिताते हैं।
मैंने मैदानों की उन्हें दरकार नहीं
कच्चे आंगन में रम लेते हैं,
खिलौनों की चाह नहीं है माँ के
पुराने कंगन से ही खेल लेते हैं।
उसकी अभावों में भी संतुष्ट आंखें
मुझे खूब सुहाती है,
वो भोली बेखबर मुस्कान मुझे लुभाती है।
छोटी सी मुलाकात में कितना कुछ सीखा गया,
जिदंगी वो मुझे काफी करीब से दिखा गया,
मानों कोई गीत ज़िंदगी का गुनगुना गया।

इतिराज शर्मा
द्वितीय वर्ष, विज्ञान संकाय

उम्मीद

हर दिन उड़ती हूँ मैं नई आशाओं के साथ,
हर दिन जीती हूँ मैं पुराने पलों के साथ।
हर पल जीती हूँ मैं नयी उमंगों के साथ,
हर मुश्किल से लड़ती हूँ
मैं नयी उम्मीदों के साथ।
बस यही चाहत है नयी उम्मीदों के साथ,
हर पल को जीना चाहती हूँ मैं अपनों के साथ।
हर ख्वाहिश है मेरी पुरानी यादों के साथ,
हर आँसू की बूंदें है मेरे सपनें के साथ।
हर पल जीती हूँ मैं नयी उमंगों के साथ

ममता चौधरी
द्वितीय वर्ष, बी.ए. कला संकाय

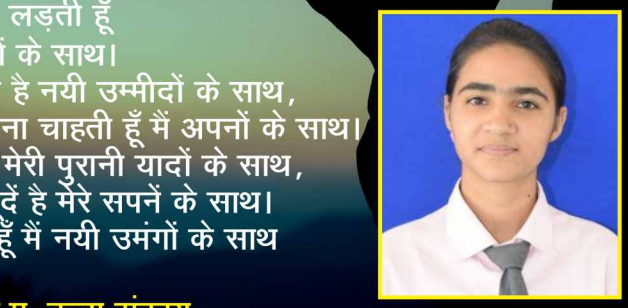

धैर्य न खोने दें

आपके मार्ग में कितना ही अंधकार क्यों न हो कितनी ही कठिनाईयाँ क्यों ना हो, काँटे और खाईयाँ क्यों न हो कभी भी अपने आत्मविश्वास और मानसिक धैर्य को मत खोइए।

यदि आप अपने आपको दीन हीन असहाय और सामर्थ्यहीन समझेंगे और ऐसा मानेंगे कि आपका कोई महत्व नहीं तो सचमुच इस संसार में आपकी कोई कीमत नहीं आँकी जायेगी। आप अपने आपको जितना अधिक योग्य समझेंगे, उतना ही अधिक महत्वपूर्ण कार्य कर पाएंगे। वैसे ही आचार– विचार और भाव आपके चेहरे पर दिखाई देने लगेंगे।

यदि आप अपने को साधारण और मामूली व्यक्ति समझेंगे तो आपके कहने से पूर्व ही आपका चेहरा यह भाव स्पष्ट कर देगा। जो गुण आपमें विद्यमान है आपके चेहरे पर उनकी झलक स्पष्ट अंकित रहती है। इन गुणों का प्रभाव दूसरों पर बिना कहे पड़ता है।

आप जिन गुणों को प्राप्त करना चाहते हैं। उनको अपने मन में संजोइये तो वह गुण स्वत: आपके हो जाएंगे। आपका मुख मण्डल उन गुणों के प्रकाश से जगमगाने लगेगा। यदि आप अपने चेहरें, आचरण अथवा व्यवहार में उच्चता लाना चाहते हैं तो आपको सबसे पहले अपने विचारों में उच्चता लानी होगी, तभी आपको सफलता प्राप्त होगी।

सुमन सोनी
तृतीय वर्ष, कला संकाय

राष्ट्र का गौरव हमारा अभिनंदन

एक वीर, साहसी, निडर हमारा पायलट अभिनंदन ! जब उसकी तस्वीर व विडियों सामने आता है तो खून में एक विशेष प्रकार का संचरण चल पड़ता है। दुश्मन की धरती पर पंख फैलाए यह वीर वहाँ उतरा तो 'भारत माता की जय' बोलने से वहाँ पर भी नहीं चूका। बस इन्हीं शब्दों की गूंज से बौखलाए कुछ उस धरती के वीरों ने अपने हाथ आजमाने प्रारंभ कर दिये जो केवल अबूझी नासमझी हरकत सी लगी। परन्तु कहते हैं कि जब सर्व धरती पर ईश्वर की सत्ता की चकाचौंध व आशीर्वाद हो तो धरती के पुतलों की क्या मजाल कि उसे नुकसान पहुँचे। कुछ ही क्षणों में बहादुरी की दौड़ लगाते हुए देश की रक्षार्थ गोपनीय कागजों को अपना निवाला बनाते हुए उस धरती का पानी ऐसे पी गया मानो उनके अरमान उनके पानी में ही डूबो दिये हो। खैर जब गली अपनी हो तो कोई भी जीव अपना रौब तो जमायेगा ही ! उनके शूरों ने भी अपना रौब दिखाना प्रारंभ कर दिया जिसके चलते उसके चेहरे पर लाल रक्त कणिकाऐं प्रदर्शित हुई फिर भी हमारा अभिनंदन कहाँ झुकने वाला था। बड़ी निडरता से अपना परिचय देते हुए कहा कि 'माई नेम इज विंग कमाण्डर अभिनंदन, फाइटर पायलट इंडियन एयर फोर्स' तब बिना घबराहट के निकले इन शब्दों को सुनकर सीना मानो गर्व से फूल गया था कि हमारी सेना का एक जवान ही काफी है दुश्मनों को जवाब देने के लिए। खैर हमारी सेना का शौर्य कोई अदना सा नहीं कि सहसा ही कोई जंग जीत जाये। दुश्मनों के शब्दों की तीक्ष्णता के घाव सहकर जब वहाँ की सीमा में सीना ताने हमारा अभिनंदन खड़ा था तो हमारे देश का हर युवा, जवान, वृद्ध, नेता व अभिनेता हर कोई उसकी निडरता को सेल्यूट करने पर उतारू था। हमें गर्व है हमारे राष्ट्र के गौरव इस अभिनंदन पर, आज मैं और मेरी कलम सम्मान के साथ सलाम करते हैं हमारी भारतीय सेना के इस वीर को जो केवल अब अभिनंदन ही नहीं अभिनंदनीय है युगों–युगों तक। मैं नतमस्तक हूँ हमारे देश के पुष्पित पल्लवित हर वीर सैनिक के प्रति जो सदैव कटिबद्ध है अपने राष्ट्र के रक्षार्थ।

जय हिन्द, जय भारत !

अमित दाधीच, प्रशासनिक अधिकारी

कृत्रिम बुद्धिमत्ता

मानव सभ्यता ने अपने प्रारम्भिक चरण से अब तक विकास के कई आयामों को छुआ है। विकास के चरण में मानव ने धरती से लेकर आकाश तक के कई रहस्यों को उजागार करने में सफलता पाई। विकास के इस चरण में मानव सभ्यता कई क्रान्तियों से होकर गुजरी। आज तकनीक ने मानव जीवन के हर पहलू को प्रभावित किया है। मानवीय कार्यों में मशीनी यन्त्रों का उपयोग हो रहा है जो कठिन शारीरिक और मानसिक कार्यों को आसानी से सम्पन्न कर रहे हैं। इसी तकनीक की अगली विकसित अवस्था कृत्रिम बुद्धिमत्ता।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता का अर्थ बनावटी (कृत्रिम) तरीके से विकसित की गई बौद्धिक क्षमता है। इसके ज़रिये कंप्यूटर सिस्टम या रोबोटिक सिस्टम तैयार किया जाता है, जिसे उन्हीं तर्कों के आधार पर चलाने का प्रयास किया जाता है जिसके आधार पर मानव मस्तिष्क कार्य करता है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता का उद्देश्य यह है कि मशीन खुद तय करें कि उसकी अगली गतिविधि क्या होगी। किन्तु इन मशीनों की जो वर्तमान स्थिति है उसके अनुसार इन मशीनों को निर्देशों के माध्यम से नियंत्रित किया जाता है। किसी मशीन को इस तरह से बनाया जाता है कि वे किसी कार्य विशेष को ही सम्पन्न कर पाते हैं। मशीन स्वयं के दिमाग से कोई निर्णय लेने में सक्षम नहीं होती है। इस अवस्था को और विकसित करते हुऐ वैज्ञानिक मशीनों को स्व–निर्णय लेने वाली स्थिति में पहुँचाने के लिये प्रयास कर रहे हैं जिसके लिये आवश्यकता है कृत्रिम बुद्धिमत्ता की। असल में कम्प्यूटर और मनुष्य में अन्तर यह है कि कम्प्यूटर निर्दिष्ट प्रोग्रामों के अनुसार किसी सूचना को सिर्फ प्रोसेस कर सकता है लेकिन वह स्वयं किसी जानकारी का कोई अर्थ नही निकाल सकता है। यह काम कृत्रिम बुद्धिमत्ता के जरिये ही सम्भव हो सकता है। हम इसे इस तरह भी परिभाषित कर सकते हैं की इस प्रकार का अध्ययन जिसमें हम एक ऐसा सॉफ्टवेयर विकसित करे जिससे एक कम्प्यूटर भी इंसान की तरह और उससे बेहतर प्रतिक्रिया दे सके।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता की श्रेणीयाँ समय के साथ भी कृत्रिम बुद्धिमत्ता से बनी मशीनों में वृद्धि हुई है। वैज्ञानिकों द्वारा ऐसे संगणक भी आविष्कृत कर लिए गए हैं जिनमें जटिल से जटिल कार्य को न्यूनतम समय में करने की क्षमता होती है। आधुनिक कंप्यूटरीकृत मशीनें किसी लिखे हुए पाठ को मानव की तरह से ही शब्दों की पहचान कर एवं पढ़ सकती है। ऑटो पायलट मोड पर वायुयान, मशीन द्वारा संचालित किये जाते हैं। कंप्यूटरों में ध्वनियाँ और आवाजों को पहचानने की क्षमता होती है। इस तरह कहा जा सकता है कि कृत्रिम तरह से ऐसा सिस्टम विकसित करना जो इंसान की तरह कार्य कर सके, सोच सके एवं अपनी प्रतिक्रिया दे सके।

आज इस क्षेत्र में क्रमिक विकास करते हुए लगभग 1000 मिलियन डॉलर का बाजार तैयार हो गया है। विशेषज्ञों को

अनुमान है कि आने वाले वर्षों में वर्ष 2025 तक यह पैतीस हजार बिलियम डॉलर का बाजार हो जायेगा। आज कई क्षेत्रों में इसके माध्यम से कार्य किये जा रहे हैं जैसे –

- विडियों गेम्स का निर्माण के प्रयास किये जा रहे हैं कि कम्प्यूटर अपने विरोधी इन्सान के साथ स्वयं कि सूझबूझ से खेल सके। इसका सबसे अच्छा उदाहरण शतरंज खेलने वाला कम्प्यूटर है। इसे मानव मस्तिष्क की तरह हर अगली चाल सोचने के लिए प्रोग्राम किया गया है। ये इतना सफल प्रयोग रहा है कि मई 1997 में आईबीएम का कम्प्यूटर विश्व के सबसे नामी खिलाड़ी गैरी कास्परोव को हरा चुका है।
- वे लोग जो किसी दुर्घटना में अपने शरीर के अंगों को खो चुके हैं उनके लिए कृत्रिम अंग दिमाग में लगे सेंसर से संचालित होते हैं।
- दुनिया में घरेलू या अन्य कार्यों को करने के लिए रोबोट तैयार किये जा रहे है। इन्हें इस तरह प्रोग्राम किया जा रहा है कि वे निश्चित कार्यों को करते हुए परिस्थिति वश स्वयं निर्णय ले सकें।
- वैज्ञानिकों द्वारा ऐसी मशीने ईजाद कर ली गई है जो किसी लिखे हुए लेखन को मानव की तरह ही पहचान कर पढ़ सकती है।
- आज ऑटो पायलट मोड पर वायुयान मशीन द्वारा संचालित किये जा सकते हैं।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता भारत में शैशवावस्था में है और देश में कई ऐसे क्षेत्र हैं जिनमें इसे लेकर प्रयोग किये जा सकते हैं। देश के विकास में इसकी संभावनाओं को देखते हुए उद्योग जगत ने सरकार को सुझाव दिया है कि वह उन क्षेत्रों की पहचान करे जहाँ कृत्रिम बुद्धिमत्ता का इस्तेमाल लाभकारी हो सकता है। सरकार भी चाहती है कि सुशासन के लिहाज से देश में जहाँ संभव हो कृत्रिम बुद्धिमत्ता का इस्तेमाल किया जाए। सरकार ने उद्योग जगत से कृत्रिम बुद्धिमत्ता के इस्तेमाल के लिये एक मॉडल बनाने में सहयोग करने की अपील की है जिसके लिये कुछ बिदुओं पर फोकस करने को कहा है, कृत्रिम बुद्धिमत्ता के लिये देश में एक अथॉरिटी बने जो इसके नियम–क़ायदे तय करे और पूरे क्षेत्र की निगरानी करे। सरकार उन क्षेत्रों की पहचान करे जहाँ प्राथमिकता के आधार पर इसका इस्तेमाल किया जा सकता है। ऊर्जा, शिक्षा, स्वास्थ्य, परिवहन, कृषि आदि इसके लिये उपयुक्त क्षेत्र हो सकते हैं।

दुनिया में जिस तेजी से कृत्रिम बुद्धिमत्ता का इस्तेमाल बढ़ रहा है. उससे सामाजिक संरचना में तेजी से बदलाव देखने को मिलेगा। रिसर्चर्स के मुताबिक कृत्रिम बुद्धिमत्ता की मदद से कोई भी काम जल्दी, बेहतर और सस्ता होगा। आगामी 45 सालों में अंदेशा जताया जा रहा है कि इंसानी काम को कृत्रिम बुद्धिमत्ता के बूते 50þ तक कम किया जा सकता है। इसका सबूत ये है कि अभी तक कई क्रिएटिव क्षेत्रों में इस्तेमाल किया जा रहा है. हाल ही में मशीन के ज़रिए एक कविता रची गई जिसको पुरस्कृत किया गया। 350 एक्सपर्ट के सर्व के मुताबिक आने वाले सालों में मशीन क्या–क्या कर सकेंगी? साल दर साल कैसे बदलेगा। कृत्रिम बुद्धिमत्ता पर काम करने वाले एक्सपर्ट्स के मुताबिक साल 2020 तक कृत्रिम बुद्धिमत्ता की मदद से वर्ल्ड पोकर सिरीज़ मशीन जीत लेगी। कृत्रिम बुद्धिमत्ता का असर आज की दुनिया पर व्यापक तौर पर देखने को मिल रहा है। आपके स्मार्टफोन से लेकर टीवी और गाड़ियों में इसकी खासी दखल है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता के क्षेत्र में हुई आशातीत प्रगति और बेहतर परीणामों को देखते हुए कई बड़ी कम्पनियों ने भी अपने अपने अनुसंधान कार्यक्रमों की शुरूआत की। धीरे–धीरे हुए अनुसंधानों से इस क्षेत्र में अनेक बेहतर परीणाम प्राप्त होते गये। जैसे–जैसे टेक्नोलोजी का विकास हो रहा है, वैसे–वैसे कृत्रिम बुद्धिमत्ता का इस्तेमाल भी बढ़ता ही जा रहा है मनुष्यों ने कृत्रिम बुद्धिमत्ता का इस्तेमाल करके मशीनों की क्षमता को काफी हद तक बढ़ा दिया है जैसे उनकी गति, उनका काम करने का तरीका और किसी भी कार्य को जल्द से जल्द पूरा करने की क्षमता आदि जिससे की उनका अमूल्य समय बर्बाद होने से बच सके और सारा का सारा काम सही तरीके से पूरा हो सके वर्तमान में जिस तेजी से कृत्रिम बुद्धिमत्ता का विकास हो रहा है, ऐसे में यह कहा जा सकता है कि जल्द ही मशीनें हमारा सारा काम चुटकी बजाते ही कर देंगी ।

डॉ. कपिल सिंह हाडा
पुस्तकालयाध्यक्ष

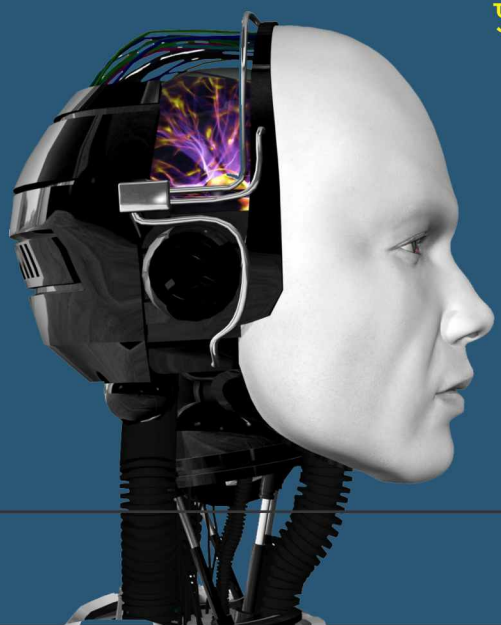

जलियांवाला बाग एक नवीन स्मृति सहित

जलियांवाला बाग हत्याकांड को 100 वर्ष पूर्ण हो चुके हैं परन्तु आज भी इस हत्याकांड की गूँज हमारे ज़ेहन में है। 13 अप्रैल, 1919 को बैसाखी के पर्व पर पंजाब में अमृतसर के प्रसिद्ध जलियांवाला बाग में ब्रिटिश जनरल रेजीनॉल्ड डायर के आदेश पर निहत्थे बूढ़ों, महिलाओं और बच्चों सहित सैंकड़ों लोगों को गोलियों से भून दिया गया था। यह हत्याकांड सिर्फ ब्रिटेन के औपनिवेशिक राज की असभ्यता का ही परिचय नहीं देता बल्कि इस ब्रिटिश राज ने भारत के इतिहास को बदल कर रख दिया। भारत भूमि को इस प्रकरण के बाद ऊधम सिंह और भगत सिंह जैसे क्रांतिकारी मिले। इन्हीं के कारण देश के कई युवाओं में देश भक्ति की लहर दौड़ी।

क्रांतिकारियों के आजादी के आंदोलन की सफलता और बढ़ता जन आक्रोश देख ब्रिटिश सरकार ने दमन का रास्ता अपनाना ही उचित समझा। पंजाब की ब्रिटिश सरकार को सूचना मिली की 13 अप्रैल को बैसाखी के दिन आंदोलनकारी जलियांवाला बाग में इकट्ठे हो रहे हैं तो सरकार ने उन्हें सबक सिखाने के लिए एक दिन पहले ही मार्शल लॉ का एलान कर दिया गया और सार्वजनिक सभाओं व रैलियों पर रोक लगा दी गई। ब्रिगेडियर जनरल डायर ने 11 अप्रैल को ही रात 11 बजे तक अतिरिक्त सैनिकों को बुला लिया और अगले दिन ही फ्लैग मार्च किया।

अमृतसर के जलियांवाला बाग में बैसाखी पर्व पर कर्फ्यू लगा हुआ था क्योंकि आंदोलनकारियों द्वारा वहाँ भाषण देना था । इसके बावजूद भी सैकड़ों की संख्या में लोग दूर–दूर से अपने परिवार के साथ मेले में घूमन आये थे और सभा के बारे में सुनकर, सभा शामिल होने के लिए वहाँ पहुँचे थे। उस समय जलियांवाला बाग की चारों तरफ की दीवारें बड़ी–बड़ी बनी हुई ओर बाहर जाने के लिए एक ही मुख्य द्वार था। उस मुख्य द्वार पर जनरल डायर अपने सैनिकों के साथ वहाँ पहुँचा और उनके सैनिकों ने गोलियां चलना शुरु कर दिया। कुछ सैनिक मुख्य द्वार पर ही तैनात होने के कारण वहाँ के लोग बाहर नहीं निकल पाये। जलियांवाला बाग में जमा लोगों की भीड़ पर 10 मिनट तक कुल 1650 राउंड गोलियां चलाई गई थी। कुछ ही समय बाद वहाँ लाशों के ढेर लगे हुए थे। आँकड़ों के अनुसार 1000 से ज्यादा लोग मर चुके थे और 2000 से अधिक लोग घायल अवस्था में थे। घबराहट में कई लोग जान बचाने के लिए बाग के कुँए में कूद गये। जिसे आज हम शहीदी कुँआ के नाम से भी जानते हैं। इस क्रूर हत्याकांड की विश्वभर में आलोचना की गई, ब्रिटिश सरकार को निंदा प्रस्ताव पारित करना पड़ा और 1920 में ब्रिगेडियर जनरल रेजीनॉल्ड डायर को इस्तीफा देना पड़ा। इस घटना के बाद रवींद्रनाथ टैगोर ने विरोधस्वरूप ब्रिटिश सरकार द्वारा दी गई अपनी उपाधि को लौटा दी थी। 13 मार्च, 1940 को ऊधम सिंह जलियांवाला बाग हत्याकांड का बदला लेने के लिए लंदन गये। वहाँ उन्होंने कैक्सटन हॉल में डायर को गोली मार कर हत्या कर दी और इस कारण से उन्हें 31 जुलाई, 1940 को फांसी दे दी गई। उत्तराखंड के ऊधम सिंह नगर का नाम उन्हीं के नाम पर रखा गया है। इस हत्याकांड की सूचना ने भगत सिंह को अन्तर्मन तक प्रभावित किया था। उस दिन वे अपने विद्यालय से 19 किलोमीटर पैदल चलकर जलियांवाला बाग पहुंचे थे।

माफी प्रकरण

ब्रिटेन की प्रधानमंत्री टेरीजा मे ने ब्रिटिश संसद में जलियांवाला बाग हत्याकांड पर अफसोस जताया है। इस हत्याकांड के बारे में टेरिजा मे ने कहा कि, जो भी हुआ था और उससे लोगों को जो पीड़ा हुई उसका हमें बेहद अफसोस है और इस घटना को ब्रिटिश–भारतीय का शर्मनाक इतिहास है। ब्रिटेन सरकार द्वारा इस घटना से सम्बन्धित माफी मांगने का प्रस्ताव रखा गया था, जिसके अन्तर्गत वहाँ के सांसदों ने इस प्रस्ताव का समर्थन किया।

ब्रिटिश सरकार के विदेश मंत्री मार्क फील्ड ने जलियांवाला बाग हत्याकांड पर संवेदना तो प्रकट की, लेकिन माफी मांगने से मना कर दिया था। मार्क फील्ड ने कहा कि यदि हम माफी मांगते है कई घटनाओं के लिए माफी मांगनी पड़ सकती है। तभी वहां उपस्थित अपने साथीयों से कहा कि किन किन घटनाओं के लिये मांगेंगे? ऐसे ही सरकार अपनी गलतियों के लिए माफी मांगने लगेगी तो वित्तीय मुश्किलें बढ़ जायेगी, दूसरी और मुद्रा भी गिर सकती है।

नेहा शर्मा, प्रशासनिक विभाग

5 Keys to Successful Management

"A boss creates fear, a leader confidence.
A boss fixes blame, a leader corrects mistakes.
A boss knows all, a leader asks questions.
A boss makes work drudgery,
A leader makes it interesting."

1. Listen

As a leader one should always endeavour to listen what each and every person in a discussion has to say before venturing one's opinion.

"A leader. . .is like a shepherd. He stays behind the flock, letting the most nimble go out ahead, whereupon the others follow, not realizing that all along they are being directed from behind."

-- Nelson Mendela.

2. Communicate

The difficulty in challenging and motivating employees is: not one size fits all. Employees are challenged in different ways and that may change over the course of their career.

"Communication skill is crucial to a leader's success. He can accomplish nothing unless he can communicate effectively."

3. Manage by Walking Around

"I've learned that people will forget what you said, people will forget what you did, but people will never forget how you made them feel." ***-Maya Angelou***

4. Lead by Example

"A leader leads by example, wheather he intends to do or not."

Managers must walk the talk. Managers must show themselves to be people of integrity and consistency in who they are and what they believe.

5. Build Respect

If managers do the 1st four things on the list, this 5th one will come effortlessly. Someone asked once. "Would you rather be feared or respected ?

Respect is the answer to this question because if your employees respects you, they are more likely to follow you wherever you are leading.

"Confidence comes not from always being right but from not fearing to be wrong."

Mahima Singh
B.B.A. VI Semester

Power of Knowledge

Knowledge in not what you stow on papers
Knowledge should leads to sagacity.
Take you from hell to gods' kingdom
Turn you vice into virtue.
Practice makes perfect its' true
Knowledge should get reflected in you
Need no one's but your own review
Knowledge is a ladder for life
A ship to sail you out of strife
Knowledge is not what you learn by role
Knowledge is something more than you think
Knowledge is knowledge
You keep learning from school to college
And yet empty of thought
When your opinion is sought.

Dimple Jyotiyana,
Assistant Professor,
English,B.A.B.Ed.Deparment

Heal the World

There are two most important things in our lives; freedom and equality in every person there is a song in their heart it says; I am free! It sings; I am one; this is the natural feeling of every child. To be free as the wind, to be one with every other child. All the troubles in the world are caused by forgetting this feeling. We are Indians, we are Germans, we are Americans, we are French, we are Italians, Asians, Africans and many other nationalities.

We are Christians, Jewis, Muslims, Hindus, Sikhs, Buddhists and Jains. We are Black, we are White, we are a community of so many differences so complex and yet so simple. We don't need to mave war.

The world needs you. Please go for it. Go after yours dreams go after your ideals. You can become everything you want to become. Become an astronaut, become a scientist, a great doctor and of course, become an artist. May be you get different awards from the world.

Just a generation ago, it was this sound that could be heard in every turn and every town. It was this sound of love that echoed in the living room when a father giggled with his son or a mother tickled a small infant child.

It was the sound of love that echoed from children literary classics as the parents recite dreamy tales to their children before they went to bed. Sadly that sound has become lost melody, a forgotten refrain, an empty tune and all we have in its place today a dark and terrible noise. Instead of dinner conversations; there is the noise of video games. That's what we need to change , that's what we should do something about making a difference and trying to help adults and parents realize that its' in our power to change the world that our children live in. Together we can make a change for the better; together we can heal the world and make it a better place for you and the entire human race.

Aliya Vasim
B.A.B.Ed. I Year

'यह लेखकों के अपने मौलिक विचार हे–सम्पादक'

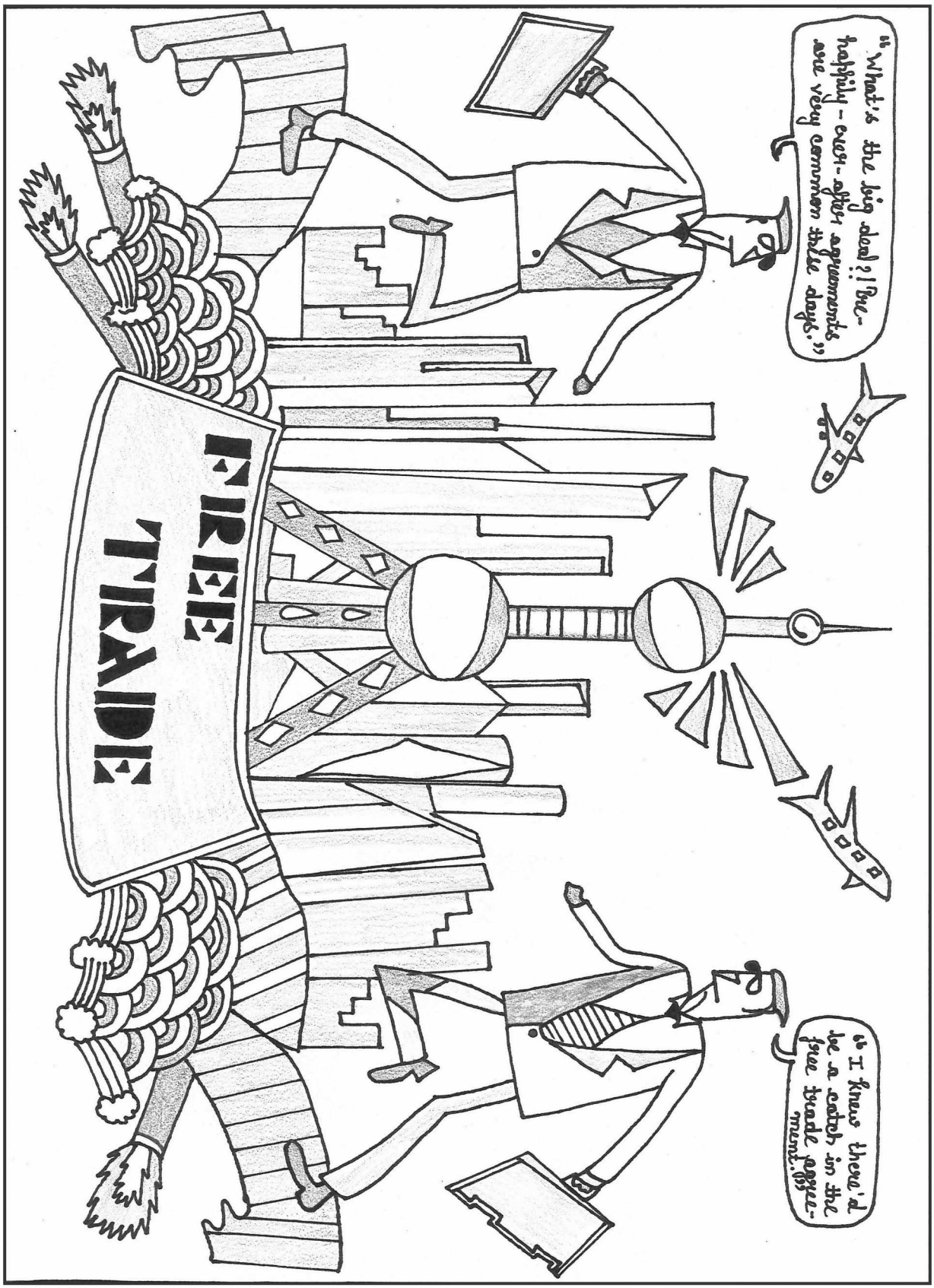

Manju Choudhary
B.A. Part - 1

KNOWLEDGE IS POWER

श्री रतनलाल कंवरलाल पाटनी गर्ल्स कॉलेज

अजमेर रोड़, किशनगढ़, अजमेर (राजस्थान) 305801
दूरभाष : 01463-307000, ई-मेल : info@rkgirlscollege.edu.in